वर्ष 44 अंक 9 सितम्बर 2017

₹ 15/-

हँसती दुनिया

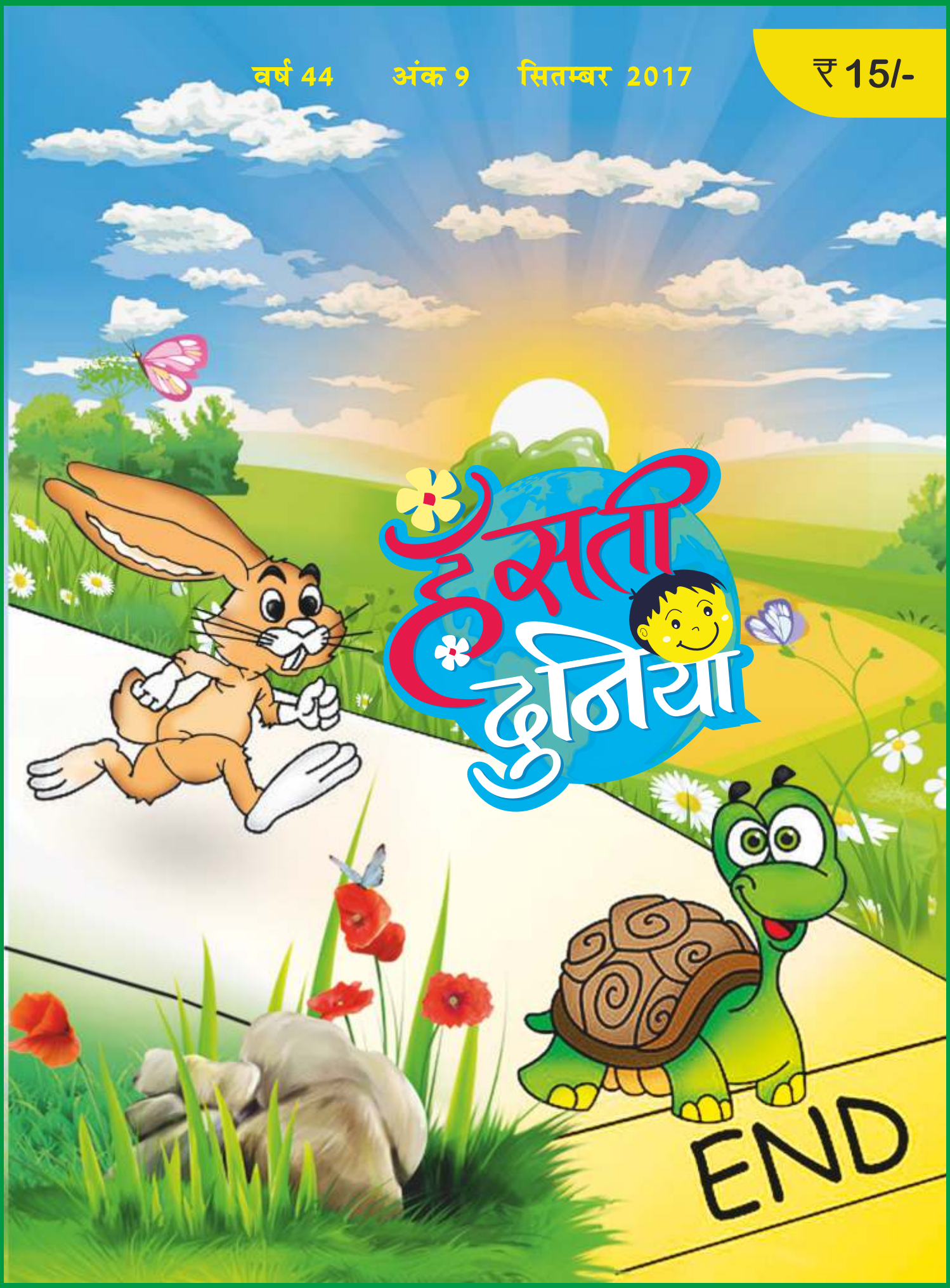

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 09 ● सितम्बर 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
11. समाचार
18. वर्ग पहेली
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

मुखपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप

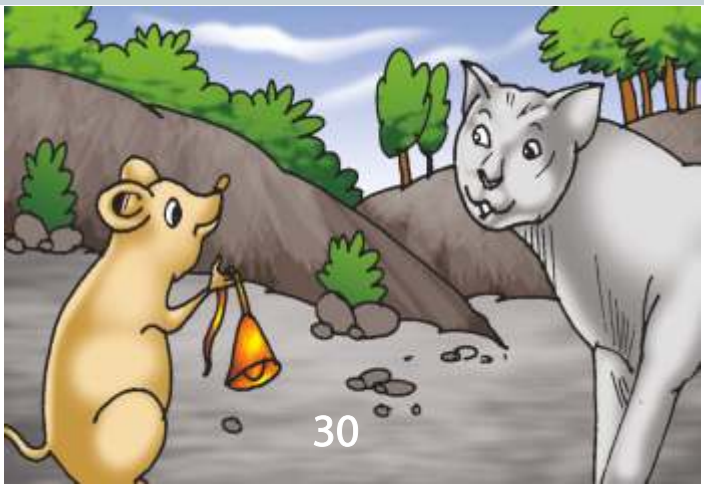

कविता

6. अपना–अपना काम
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

17. एकता का गीत, फूलो की डाली
: कमलसिंह चौहान

22. हरी सब्जियां खाएं
: डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

22. भूल न जाना
: महेन्द्र सिंह शेखावत

28. धरती का शृंगार है पेड़
: डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

28. नन्हा पौधा
: गोविन्द भारद्वाज

33. पूनम का चाँद
: कमलसिंह चौहान

33. कहते चन्दा–मामा
: राजेन्द्र निशेश

47. गुरु का आदर जो भी करते
: हरजीत निषाद

विशेष / लेख

7. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

8. रोबोट करेंगे ट्रैफिक कंट्रोल
: डॉ. विनोद गुप्ता

16. संसार का अनोखा शुष्क मरुस्थल
: कमल सोगानी

21. बिन आँखों की मछली
: अर्चना सोगानी

26. गोवा और बिहार का राजकीय पशु : गौर
: डॉ. परशुराम शुक्ल

31. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

32. हॉक की अनोखी उड़ान
: कमल सोगानी

38. हिमालय का दुर्लभ वृक्ष : च्यूर
: कमल सोगानी

42. एक पेड़ पर दो प्रजातियों के फल
: डॉ. विनोद गुप्ता

43. एक जीव ऐसा भी...
: अर्चना सोगानी

कहानियां

9. मेहनत की चमक
: राधेलाल 'नवचक्र'

19. धर्मात्मा की खोज
: शशिकान्त

23. मैं बेईमान नहीं
: परिधि जैन

29. छोटू चूहे की बहादुरी
: गोविन्द भारद्वाज

39. चीकू खरगोश फिर हार गया
: वैदही शर्मा

47. शिक्षक की भूमिका
: रूपनारायण काबरा

सबसे पहले

स्वयं–शिक्षक बनें

आज कक्षा में लगभग सभी विद्यार्थी उपस्थित हैं। सभी अपने अध्यापक के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जैसे ही अध्यापक ने कक्षा में प्रवेश किया सभी विद्यार्थियों ने बहुत उत्साहित होकर उनका स्वागत किया। अनेकों विद्यार्थियों ने अध्यापक को उपहार दिए और अध्यापक के चरण स्पर्श भी किए। अब सभी अपनी–अपनी जगह पर बैठ गए और अध्यापक ने बड़े ही प्रेम से सभी का अभिवादन, उपहार एवं भेंट इत्यादि स्वीकार किया।

अब अध्यापक ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा– आज शिक्षक दिवस है आप सभी की शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद। भेंट, शुभकामना–पत्र आदि शिक्षक को दिया जाना, सम्मान एवं प्रेम का प्रतीक है। इसके साथ–साथ शिक्षक द्वारा समझाई एवं बताई हुई बातों को अपने जीवन और आचार–व्यवहार में लाना हमारे आने वाले समय को बहुत ही उपयोगी एवं सार्थक बना सकता है। अगर एकाग्र होकर अपने शिक्षक की शिक्षा को ग्रहण कर अपनाया जाए और समय आने पर उसका सही उपयोग किया जाए, तभी इस शिक्षा का सार्थक उपयोग है और शिक्षक के प्रति धन्यवाद और सम्मान भी। सभी विद्यार्थियों ने ताली बजाकर अपने शिक्षक की इस बात को सराहा, स्वीकार किया और फिर सभी अध्ययन में व्यस्त हो गए।

प्यारे साथियों! हम भी हर वर्ष शिक्षक दिवस पर शिक्षकों को शभुकामनाएं एवं धन्यवाद देते हैं और शिक्षक दिवस मनाते भी हैं।

सोचने की बात यह है कि क्या यह मात्र औपचारिकता तो नहीं रह गई कि टीचर को गिफ्ट दिया, चाय–पार्टी की, आशीर्वाद लिया और बात समाप्त हो गई? क्या हमारे टीचर या अध्यापक जिन्होंने हमें स्कूल या कॉलेज में पढ़ाया वही शिक्षक हैं?

जब से हमारा जन्म हुआ तब से हम शिक्षा ही तो प्राप्त कर रहे हैं। हमारे प्रथम शिक्षक तो हमारे माता–पिता ही होते हैं। जिनके पास रहकर हम जीवन की यात्रा आरम्भ करते हैं। हमारे बहन–भाई, रिश्तेदार, पड़ोसी सभी से हम कुछ न कुछ सीखते हैं फिर बारी आती है स्कूल की, कॉलेज की, उसके बाद समाज की। सभी जगह हम कुछ न कुछ सीखते हैं।

शिक्षा का अर्थ ही होता है कुछ सीखना। हम सभी से कुछ न कुछ अवश्य सीखते हैं, अच्छा या केवल अच्छा ही अच्छा। जो भी हम सीखना चाहते हैं हम वही सीखते हैं क्योंकि वही हमारी इच्छा होती है, चाहे वह अच्छी हो या न हो फिर भी हमें तो वही अच्छी लगती है। इसका सीधा–सा अर्थ यही है कि हम अपनी–अपनी बात और अपनी इच्छा को अपने अनुभव से तय करते हैं। इस प्रकार हम स्वयं को उसी तरह से चलाना शुरू कर देते हैं और अपने शिक्षक स्वयं बन जाते हैं।

जिस दिन हम स्वयं–शिक्षक बन जाते हैं, उस दिन स्व–शिक्षा भी आरम्भ हो जाती है। हमसे कोई भी अपने को अनुचित मार्ग पर चलने नहीं देना चाहता। हाँ, आगे बढ़ते समय यह ध्यान अवश्य रखना होगा कि जब ज्ञान का दीपक हमारे हाथ में होगा तब उसकी उज्ज्वलता में सब कुछ साफ–साफ दिखाई देगा, रास्ता भी और मंजिल भी।

–विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 158

सच ए इक्को जे तूं जाणे गुर दर्शन दीदार ए सच।
महिमा गाणी इक दाते दी एसे दी वीचार ए सच।
सच्चे रब ने सच बणायै सच आप निरंकार ए सच।
सत्गुर पूरा सच्चा ए ते इस नाल करना प्यार ए सच।
सच्ची सत्गुर दी ए संगत एह सच्चा दरबार ए सच।
सच्चा सभ दा साईं सच्चा सच्चा इक करतार ए सच।
गुर मन्दर ए सच्चा सुच्चा गुर पूजा सत्कार ए सच।
सच आखां जिस सच पछाता उसदा कार विहार ए सच।
इक सच्चे नूं पावे जेहड़ा उस लई कुझ वी कच नहीं।
कहे अवतार गुरु दे बाझों हासल हुन्दा सच नहीं।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सत्य एक ही है, अनेक नहीं। इन्सान तू निश्चित जान ले कि सद्गुरु का दर्शन–दीदार ही सत्य है क्योंकि सद्गुरु और निरंकार एक ही हैं। सबको सबकुछ देने वाले इस दाता की महिमा गाना और इस ईश्वर की विचार भी सत्य है। इस सत्य प्रभु–परमात्मा ने जो चेतन माया (जीवात्मा) बनाई है, यह भी सत्य है और इसे बनाने वाला यह निरंकार परमात्मा भी स्वयं सत्य है। इन्सान को यह बात समझ लेनी चाहिए कि पूर्ण सद्गुरु सत्य है और इसके साथ प्यार करना भी सत्य है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सद्गुरु की साधसंगत ही सत्य है। सद्गुरु की कृपा से आत्मज्ञान होने पर ही इन्सान सत्य के साथ जुड़ता है और मानव जीवन पाकर पूर्ण सद्गुरु की संगत करने वालों का जीवन सफल हो जाता है। यह सत्य (प्रभु–परमात्मा) ही सबका स्वामी है और सबकुछ करने–कराने वाला करतार भी है। सद्गुरु सत्य का पावन मंदिर है और गुरु की पूजा और सत्कार करना सत्य है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि मैं सत्य कहता हूँ कि जिसने इस सत्य (निराकार) को पहचान लिया उसका हर कार्य–व्यवहार सत्य है। इस सत्य को प्राप्त करने वालों के लिए जीवन में सब कंचन (आत्मा) है, कुछ भी कांच (माया) नहीं है। बिना सद्गुरु की कृपा के यह सत्य कभी किसी को प्राप्त नहीं होता है।

बाल कविता : डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

अपना अपना काम

खेतों में हल कृषक चलाता।
बर्तन ढेर कुम्हार बनाता।।

बढ़ई बनाता है फर्नीचर।
कपड़े बुनता रहता बुनकर।।

राज करे तैयार मकान।
हलवाई बढ़िया पकवान।।

व्यापारी व्यापार चलाए।
मोची जूतों को चमकाए।।

रिक्शाचालक रिक्शा खींचे।
माली बाग–बगीचा सींचे।।

अध्यापक करता अध्यापन।
सैनिक मारा करता दुश्मन।।

बस ले जाती बिठा सवारी।
डॉक्टर दूर करे बीमारी।।

सबका अपना–अपना काम।
बच्चों, तुम भी करना नाम।।

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के

अनमोल वचन

★ संसार में घृणा से अधिक शक्तिशाली प्रेम और क्षमा ही है।

★ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।

★ परमात्मा एक ही है, अनेक नहीं। यह सार्वभौमिक सत्य है जो कण–कण में व्याप्त है। अगर अल्लाह के नाम से पुकारते हैं तब भी यह वही रहता है और अगर राम के नाम से पुकारते हैं तब भी। यह छोटा–बड़ा नहीं हो जाता।

★ परमात्मा के उस नाम को अगर छोटा कहते हैं, जिसे हम सम्बोधन में नहीं लाते तो इससे हमारी अज्ञानता ही प्रमाणित होती है। सारे इन्सान जो इस धरती पर बसे हुए हैं वो एक ही खुदा के परिवार के हैं जो इस सच्चाई को जान गये हैं वे अलग–अलग नामों के बखेड़ों में नहीं पड़ते। इसलिए धर्म के मूल भाव को समझकर आध्यात्मिकता को धारण करें।

★ ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।

★ हीरा कभी यह नहीं कहता कि मैं बहुत कीमती हूँ। उसके गुण ही उसको कीमती बना देते हैं। इसी प्रकार से भक्त कभी अपने आपको ऊँचा नहीं कहता। उसका गुण ही उसको ऊँचा बना देता है।

★ मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।

★ दुर्गणों को त्याग कर, सद्गुणों से युक्त होकर जो आपको मानवता के रास्ते पर लगा देता है, वही तुम्हारा सच्चा साथी है।

★ भक्त एक खिले फूल की भाँति होता है और भक्ति उसकी महक है।

★ ब्रह्मज्ञान प्राप्त किये बिना भक्ति आरम्भ नहीं होती है।

★ जैसे प्रकाश सूर्य का, खुशबू फूल का प्रतीक है उसी प्रकार इन्सानियत इन्सान का प्रतीक है।

विशेष जानकारी : डॉ. विनोद गुप्ता

रोबोट करेंगे ट्रैफिक कंट्रोल

शहरों में अव्यवस्थित यातायात को व्यवस्थित करने हेतु ट्रैफिक पुलिस तैनात होती है जो यातायात नियम तोड़ने वालों का चालान करते हैं। मुमकिन है कुछ समय बाद चौराहों पर आप रोबोट को ट्रैफिक पुलिस के रूप में देखें।

अफ्रीका के किंशासा समेत शहरों में पुलिस अफसरों और ट्रैफिक लाइट्स की जगह रोबोट ट्रैफिक पुलिस ने ले ली है। यह विशाल रोबोकॉप अच्छा काम कर रहे हैं। पहली नजर में ये सिर्फ टीन के डब्बे नजर आते हैं। मगर लोगों ने इस टेक्नोलॉजी की अच्छी प्रतिक्रिया दी है। आठ फीट लम्बे ये रोबोट एल्युमिनियम और स्टेनलेस स्टील से बने हैं। इन्हें सोलर पेनल से पॉवर मिलता है। इनमें लगे मल्टीपल कैमरा ट्रैफिक का फलो रिकॉर्ड करते हैं। पहले लोग ट्रैफिक लाइट्स को गंभीरता से नहीं लेते थे, मगर इन विशाल रोबोट्स का मनोवैज्ञानिक असर लोगों पर पड़ा है।

फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इन दिनों ऐसे रोबोट्स बनाने में जुटे हैं जो पुलिस अफसरों की तरह दबंग हों। इन रोबोट्स का संचालन उन पुलिसवालों के हाथों होगा जो चोटिल या विकलांग होने के चलते असमय सेवानिवृत्त हुए या फिर वे अनुभवी अफसर जो शहरों में कानून व्यवस्था बनाने के लिए बतौर वॉलेटियर काम करेंगे। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस तरह के रोबोट जल्द ही दुनियाभर के देशों की जरूरत होंगे।

अमेरिका के नेवी रिजर्व से जुड़े कमांडर जेमी राबिंस निजी रूप से इस प्रोजेक्ट में रूचि ले रहे हैं। वे कहते हैं, प्रयोगशाला में बनी रोबोट पुलिस सड़कों पर पहरा देगी, आपात फोन कॉल पर उचित कार्रवाई करेगी, नियम तोड़ने वालों पर जुर्माना लगाएगी और परमाणु ऊर्जा संयंत्रों जैसी संवेदनशील जगहों पर निगरानी रखेगी। राबिंस के मुताबिक, इस परियोजना का सबसे मुश्किल काम इन रोबोकॉप के चेहरे को डिजाइन करना है क्योंकि हम चाहते हैं कि वे असल पुलिस वालों की तरह दबंग और मुस्तैद दिखाई दें। साथ ही उनके चेहरे पर रोबिली मुस्कान हो ताकि पांच साल का बच्चा भी उनसे मदद मांगने में न झिझके।

★ ★ ★

बाल कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

मेहनत की चमक

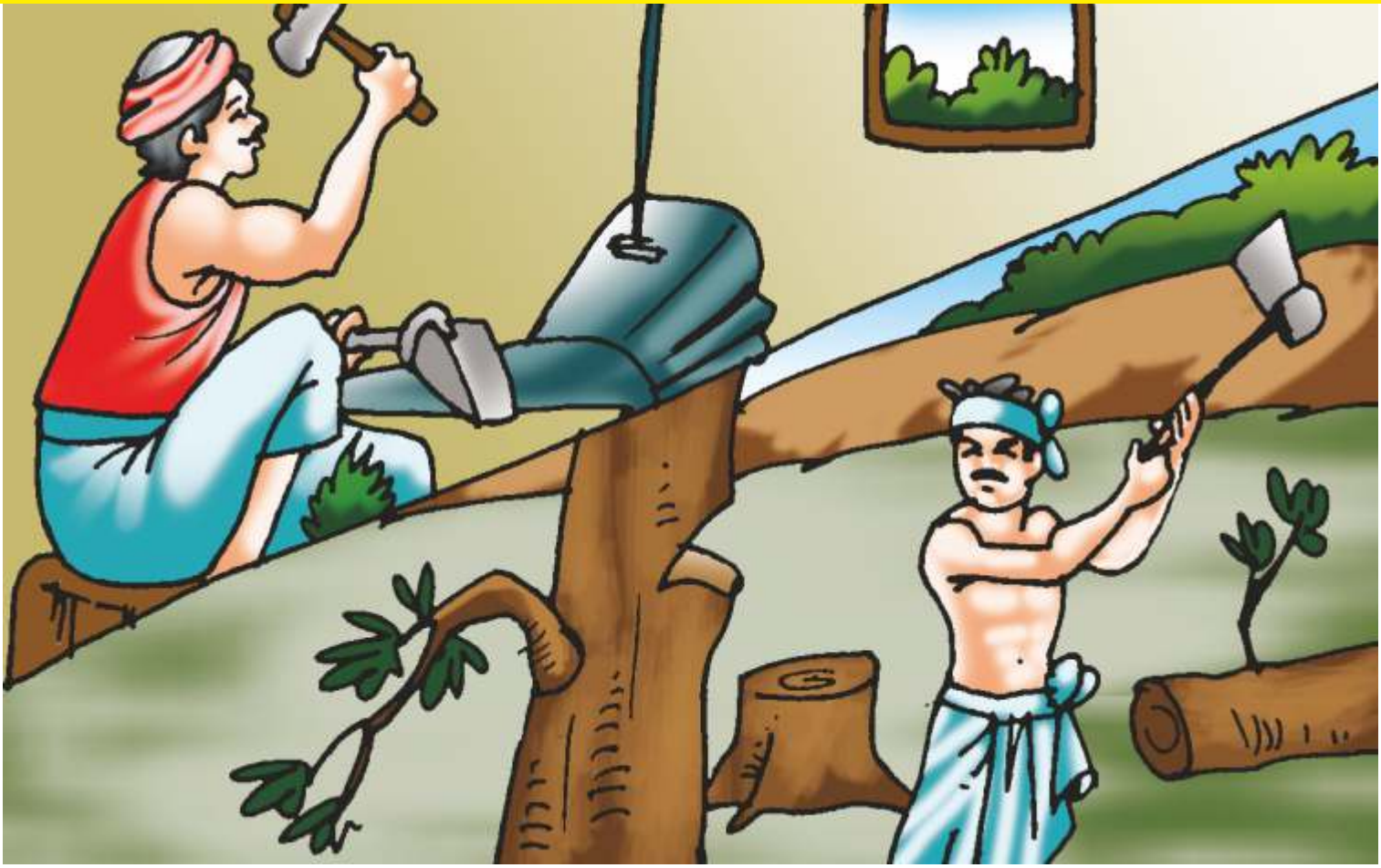

किसी लकड़हारे को रास्ते में कहीं लोहे का एक टुकड़ा पड़ा मिला। उसे उठाकर वह लोहार की दुकान पर जा पहुँचा। फिर उससे कहा– भाई, लोहे के इस टुकड़े से मुझे दो कुल्हाड़ियां बना दो। उचित मेहनताना दे दूंगा।

–बहुत खूब!– कहकर लोहार ने लोहे के उस टुकड़े को लेकर रख लिया।

–कब मिलेंगी कुल्हाड़ियां? – लकड़हारे ने पूछा।

–परसों दे दूंगा।– वह बोला।

समय पर आकर लकड़हारा दोनों कुल्हाड़ियां लेकर घर लौटा। उसने एक कुल्हाड़ी को घर के किसी कोने में रख दिया और दूसरे से जंगल जाकर वह लकड़ियां काटता। फिर उन्हें बेचकर

अपना गुजर–बसर करता। इस तरह एक साल गुजरा।

एक दिन लकड़ी काटते–काटते कुल्हाड़ी की बेंट (हत्था) टूट गयी। लकड़हारा कुल्हाड़ी में दूसरी बेंट लगाने के ख्याल से घर लौटा। घर आकर उसने उस कुल्हाड़ी में दूसरी बेंट लगाकर उसे उसी जगह रख दिया। जहाँ एक और कुल्हाड़ी पहले से रखी–पड़ी थी।

पहले से रखी कुल्हाड़ी ने जब अपने करीब रखी दूसरी कुल्हाड़ी पर नजर दौड़ायी तो वह दंग रह गयी। चकित हो वह उससे बोली– अरी, हम दोनों तो एक ही लोहे के टुकड़े से बनी हैं। एक ही लोहार ने एक ही साथ हम दोनों को बनाया है। फिर आज तुम में इतनी चमक क्यों है? कहाँ से आई? और मेरा रूप देखो कितना भद्दा हो गया है। मानों बहुत दिनों की रोगिणी हूँ। आखिर तुम में ऐसी क्या खूबी है?

–बहन, मैं जब से बनी हूँ, काम करती रही हूँ और तुम जिस दिन से बनी हो, उस दिन से आराम फरमा रही हो। है न?

–हाँ।– पहली कुल्हाड़ी बोली।

–मुझमें तुम जो चमक देख रही हो, वह उसी मेहनत की वजह से है और आलसी निठल्ले की तरह पड़ी रहने से तुम्हारी ऐसी दशा हुई है। अपनी शुरू की चमक भी तुम खो बैठी हो।– एक क्षण रूक कर दूसरी कुल्हाड़ी फिर बोली– याद रखो, मेहनती हमेशा स्वस्थ रहता है और आलसी रोगग्रस्त हो जाता है।

कोने में पहले से पड़ी कुल्हाड़ी को अब सारी सच्चाई अच्छी तरह से समझ में आ गयी। अपने आलसपन पर वह खूब लज्जित भी हुई।

क्या आप जानते हैं?

प्रस्तुति : यशी हार्दिक सक्सेना

- ★ संसार का सबसे ऊँचा पौधा – सिकोया सेम्परविरेंस : ऊँचाई 120 मीटर।
- ★ सबसे ऊँचा वृक्ष – यूकेलिप्टस।
- ★ सबसे बड़ा फल – लोडोसिया : इसे डबल कोकोनट भी कहते हैं, यह केरल में पाया जाता है।
- ★ सबसे बड़ा फूल –रैफ्लेशिया ओरनोल्डी : एक मीटर, वजन लगभग 8 किलो।
- ★ सबसे छोटा फूल – बुल्फिया।

ईंधन का उत्सर्जन करने वाला ब्लैकहोल मिला

बोस्टन। वैज्ञानिकों ने एक श्याम विविर (ब्लैक होल) की खोज की है जो तारे के निर्माण के लिए बहुत गर्म गैस को ठंडे ईंधन में परिवर्तित कर रहा है। अमेरिका के 'मैसाचुसेट्स' प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईटी) और ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अनुसंधाकर्ताओं ने पाया है कि मध्य आकाशगंगा के श्याम विविर से एक अरब डिग्री गैस निकलती है और साथ के प्लाज्मा में बड़े बुलबुले के रूप में प्रवेश कर जाती है। इस तरह से श्याम विविर ठंडी गैस के जरिए तारों के निर्माण में मदद करता है क्योंकि सौरमंडल ठंडी गैस का इस्तेमाल ईंधन के रूप में करता है। इस अध्ययन का प्रकाशन 'एस्ट्रोफिजिकल जर्नल' में हुआ है। (भाषा)

—संग्रहकर्ताः बबलू कुमार

दादा जी
कहानी एवं चित्रांकन
अजय कालड़ा
एक बहुत ही घने जंगल में एक बूढ़ा शेर रहता था। बूढ़ा होने के कारण वह शिकार नहीं कर पाता था।
एक बार की बात है। शेर काफी दिन से भूखा था वह भोजन की तलाश में जंगल में घूम रहा था।
घूमते–घूमते शेर को एक गुफा नज़र आई। थकावट के कारण वह उस गुफा में घुसकर आराम करने लगा और सोचा– जो भी जानवर यहाँ रहता होगा, जब वह यहाँ आयेगा तो मैं उसका शिकार कर लूँगा।

शाम हो चुकी थी। उस गुफा में एक गीदड़ रहता था, जो शाम होने पर गुफा की ओर बढ़ रहा था।
गीदड़ रोज की तरह अपनी मस्ती में अपनी गुफा की ओर बढ़ रहा था कि अचानक उसकी नज़र जमीन पर पड़े शेर के पैरों के निशान पर पड़ी।
गीदड़ उन पैरों के निशान के पीछे चलता–चलता अपनी ही गुफा के द्वार पर पहुँच गया।

गीदड़ ने ध्यान से शेर के पैरों के निशान को देखा। उसे पैरों के अन्दर जाने के निशान तो नज़र आये, लेकिन बाहर आने के निशान नहीं मिले। अब वह सोचने लगा कि वह क्या करे!
शेर गुफा में है या नहीं इस बात की पुष्टि करने के लिए उसने एक तरकीब सोची। वह गुफा को आवाज़ लगाता है– ''हे गुफा मैं अन्दर आ जाऊँ... ।''
गुफा से कोई आवाज़ नहीं आने पर वह फिर आवाज़ लगाता है– हे गुफा आज तुझे क्या हो गया, रोज तो तू मुझे जवाब देती है आज जवाब क्यों नहीं देती?

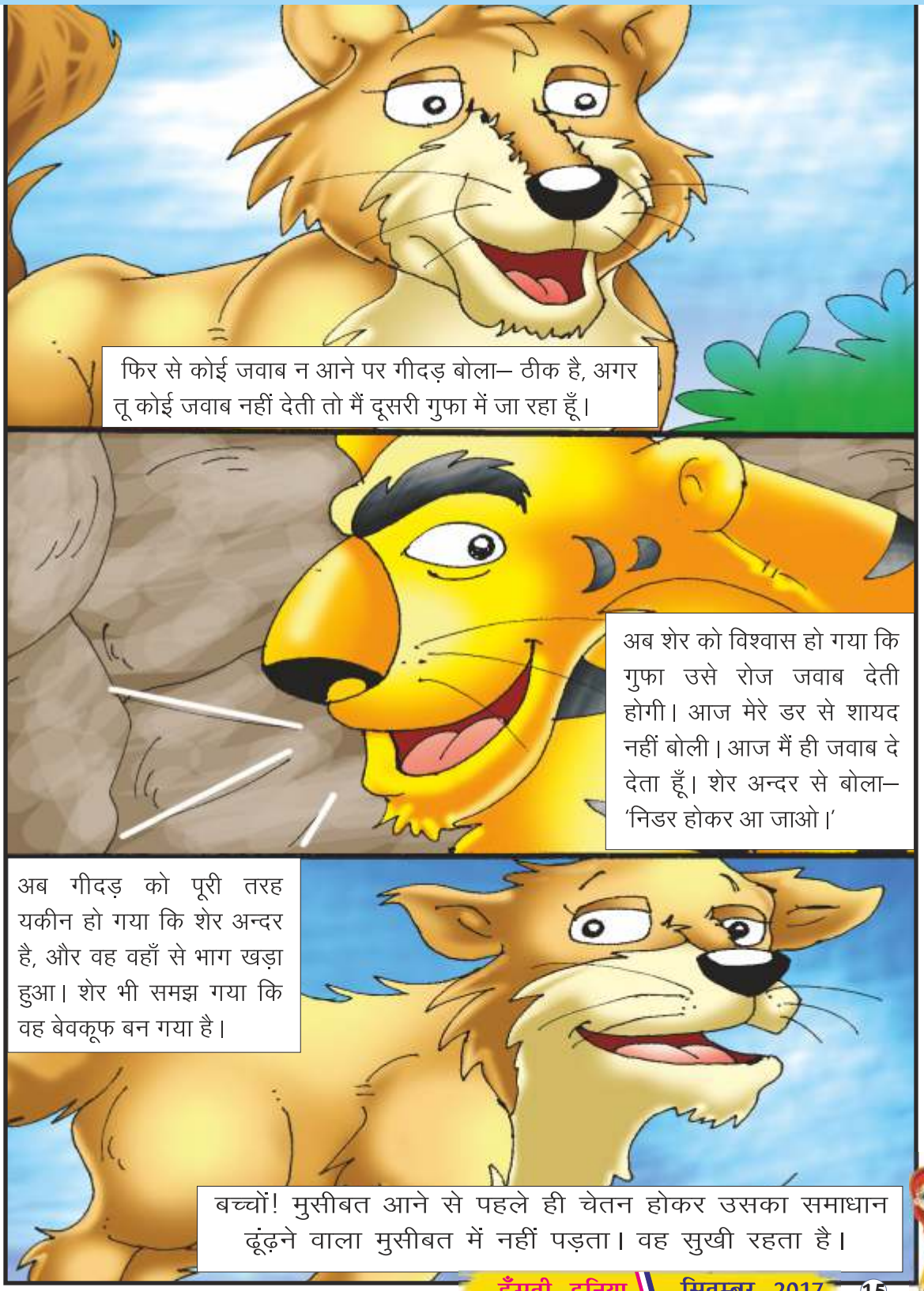
फिर से कोई जवाब न आने पर गीदड़ बोला– ठीक है, अगर तू कोई जवाब नहीं देती तो मैं दूसरी गुफा में जा रहा हूँ।
अब शेर को विश्वास हो गया कि गुफा उसे रोज जवाब देती होगी। आज मेरे डर से शायद नहीं बोली। आज मैं ही जवाब दे देता हूँ। शेर अन्दर से बोला– 'निडर होकर आ जाओ।'
अब गीदड़ को पूरी तरह यकीन हो गया कि शेर अन्दर है, और वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ। शेर भी समझ गया कि वह बेवकूफ बन गया है।
बच्चों! मुसीबत आने से पहले ही चेतन होकर उसका समाधान ढूंढ़ने वाला मुसीबत में नहीं पड़ता। वह सुखी रहता है।

जानकारी : कमल सोगानी

संसार का अनोखा शुष्क मरुस्थल...

दोस्तो! यह बात तो तुम अच्छी तरह जानते ही हो कि मरुस्थल क्षेत्रों में बरसात बहुत कम होती है। बरसात कम होने के कारण इन स्थलों की जमीन पूर्णतया बंजर होती है। यहाँ पेड़–पौधे दूर–दूर तक दिखाई नहीं देते, मरुस्थलों में कहीं–कहीं खेजड़ी, बबूल, कैक्टस आदि के पेड़–पौधे दिखाई देते हैं, कहीं–कहीं कटीली झाड़ियां भी दिखाई देती हैं। दाना–पानी न मिलने के कारण ऐसे स्थलों पर पशु–पक्षी भी दिखाई नहीं देते। मरुस्थलों के वातावरण में जन–जीवन भी संभव नहीं है।

आओ, अब तुमको संसार के सबसे शुष्क मरुस्थल की सैर कराते हैं। यह दक्षिण अमेरिका में स्थित एक शुष्क पठार है। इसका विस्तार एण्डीज पर्वतमाला के पश्चिमी में प्रशांत तट पर तकरीबन 1100 कि.मी. क्षेत्र में फैला हुआ है।

तुम्हें जानकर ताज्जुब होगा कि इस मरुस्थल में बरसात का स्तर 0.004 इंच/0.01 से.मी. प्रतिवर्ष से भी कम है। वैसे यहाँ का तापमान 0 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री के बीच रहता है।

यहाँ की जमीन में जहरीले सांपों, बिच्छू व अन्य जहरीले कीटों की भरमार है। ये सभी बंजर जमीन में बिल बनाकर रहते हैं। वैसे इस मरुस्थल को 'जहरीली बस्ती' के नाम से भी जाना जाता है। यह पूरा मरुस्थल 'अटाकामा मरुस्थल' के नाम से जाना जाता है। यहाँ पिछले 423 वर्षों से बरसात नहीं हुई है। अमेरिका के वैज्ञानिक यहाँ की जलवायु और मिट्टी की तुलना मंगल ग्रह से करते हैं।

गर्मियों में इस मरुस्थल में धूल के गुब्बार उड़ते हैं, तब चारों ओर धुंधलापन छा जाता है तथा कई–कई जगह धूल के टीले दिखाई देने लगते हैं। यहाँ रात्रि में अक्सर मौसम ठंडा रहता है तथा जहरीले सांपों को बड़ी तादाद में आसानी से रेंगते हुए देखा जा सकता है।

वैज्ञानिकों द्वारा इस स्थल की सूक्ष्म जांच–पडताल की गई तो विदित हुआ कि 'सहारा मरुस्थल' की तुलना में यहाँ का तापमान काफी कम है। इसी कारण यहाँ की जमीन बंजर है।

दक्षिण अमेरिका का मेरटू पठार भी शुष्क श्रेणी में आता है, यहाँ के वातावरण में पेड़–पौधे व पानी नहीं है। दूर–दूर तक सूखी बंजर भूमि पसरी हुई है। इस बंजर भूमि पर काले बिच्छू, कनखजूरे व जहरीले केकड़ों का साम्राज्य है। लोग इस स्थल को 'नरक का मंजर' भी कहते हैं।

इनसे सीखिए

देशप्रेम	: भगत सिंह से
पितृ भक्ति	: श्रवण कुमार से
गुरु भक्ति	: एकलव्य से
भक्ति	: प्रहलाद से
आज्ञापालन	: श्रीरामचन्द्र से
श्रम	: चींटी से
वीरता	: अभिमन्यु से
दान करना	: कर्ण से
गम्भीरता	: समुद्र से
न्याय	: विक्रमादित्य से
एकता	: पानी से
हँसना	: फूलों से
एकाग्रता	: अर्जुन से
प्रेम	: भारत से

प्रस्तुति : विनय हशमतराय

दो कविताएं : कमलसिंह चौहान

एकता का गीत

छोटे–छोटे प्यारे फूल,
लाल गुलाबी पीले फूल।
डाली पर इतराये देखो,
तितली से शरमाये फूल।।

भौंरे भी आंचल में बैठे,
मधुमक्खी संग गाते फूल।
रवि किरणों से मोहित होते,
खिलखिलाते हँसते फूल।।

बाग भी है आंगन जैसा,
ठुमक–ठुमक से जाते फूल।
कांटों के संग हर पल रहते,
कभी निराश न होते फूल।।

शाला की घंटी जब बजती,
बस्तों सा सकुचाते फूल।
गीत एकता का मिलकर गाओ,
सबको पाठ पढ़ाते फूल।।

फूलों की डाली

लचक रही फूलों की डाली,
पानी सींच रहा है माली।
तितली भौंरे झूम रहे हैं,
छलक रही चंदा की थाली।।

डाली के फूलों को देखो,
तोड़ो नहीं न इनको फेंको।
हँसना इनसे सीखो बच्चों,
भरा हुआ मन नहीं है खाली।।

कितने सुंदर प्यारे फूल,
चारों तरफ हैं इनके शूल।
लाल गुलाबी नीले पीले,
इन कलियों की उमर है बाली।।

प्रेम से इनसे मिलना सीखो,
बच्चों इनसे खिलना सीखो।
उड़े सुगंध और तन मन भीगे,
महक रही सौरभ की प्याली।।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा, रेवाड़ी

200वीं

वर्ग पहेली

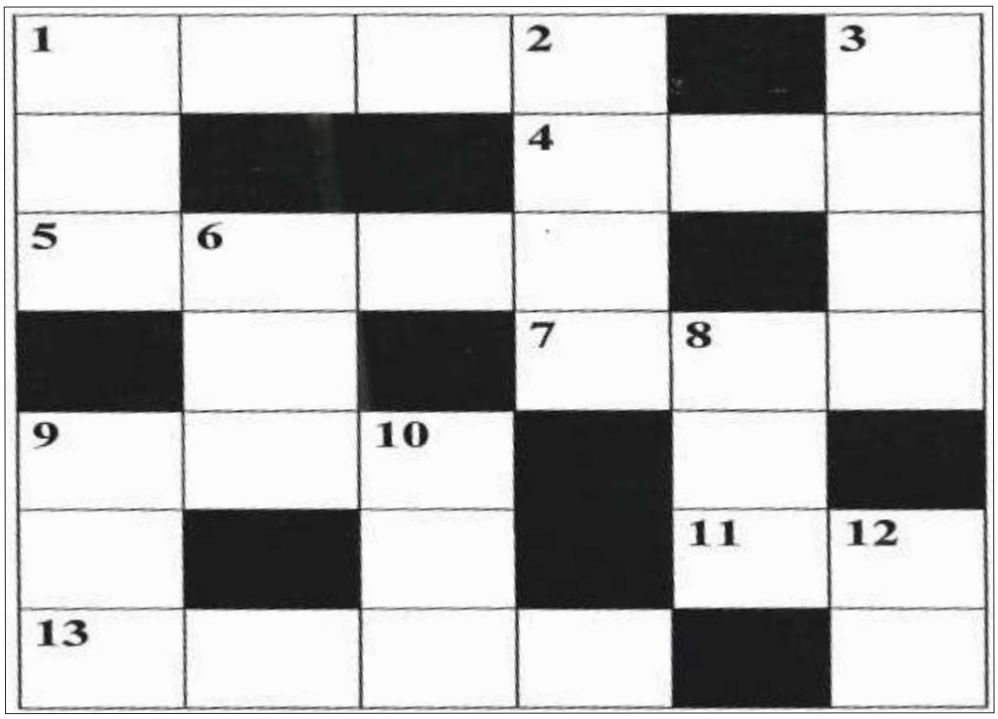

बाएं से दाएं →

1. सन्धि कीजिये : जगत् + ईश।
4. आधा लाख बराबर पचास ..... ।
5. भारत का नया 29वां राज्य जो 2 जून, 2014 को बना।
7. इराक का एक पड़ोसी देश : (ईरान / नेपाल)।
9. 16वीं लोकसभा के लिए 2014 में सम्पन्न चुनावों में भारतीय .... पार्टी को सबसे अधिक सीटें प्राप्त हुईं।
11. वरुण और बृहस्पति ग्रहों के बीच स्थित ग्रह।
13. मुगल सम्राट अकबर का सबसे अधिक बुद्धिमान मंत्री।

ऊपर से नीचे ↓

1. सत्यमेव ..... यानि सच की ही जीत होती है।
2. जिस वाद्ययंत्र से उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ सम्बन्धित थे।
3. युसुफ पठान का भाई ..... पठान।
6. इंग्लैंड की राजधानी।
8. अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय व्यक्ति ..... शर्मा हैं।
9. 'जनवरी' शब्द के पहले, 'मलेशिया' के दूसरे और 'सोयाबीन' के तीसरे अक्षर को मिलाने से बनने वाली एक मिठाई का नाम।
10. जलाशय जिसका पर्यायवाची शब्द है : (तालाब / बादल)।
12. शुद्ध शब्द छांटिए : निजी / निजि।

प्रेरक–प्रसंग : शशिकान्त

धर्मात्मा की खोज

एक राजा के चार पुत्र थे। एक दिन राजा ने उन्हें बुलाकर कहा– जाओ, किसी धर्मात्मा को खोजकर लाओ। जो सबसे बड़े धर्मात्मा को लाएगा, उसी को राजगद्दी पर बैठाऊंगा।

चारों पुत्र चले गये। कुछ दिन बाद बड़ा पुत्र लौटा। वह अपने साथ एक सेठ को लाया। उसने राजा से कहा– महाराज! ये सेठ जी खूब दान–पुण्य करते हैं। इन्होंने कई मंदिर बनवाए, तालाब खुदवाए, प्याऊ लगवाए और ये साधु–सन्तों को नित्यप्रति भोजन करवाते हैं।

राजा ने यह सुनकर सेठ जी का काफी सत्कार किया और फिर सेठ जी चले गये।

इसके बाद दूसरा पुत्र कृशकाय ब्राह्मण को लेकर आया और बोला– ये विप्र महाराज, चारों धाम की पैदल यात्रा कर आए हैं। व्रत करते हैं और कभी असत्य नहीं बोलते। राजा ने ब्राह्मण को यथोचित् दान–दक्षिणा देकर विदा किया।

फिर तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर आया। साधु ने आते ही आसन लगाया और आँखें बंद कर ध्यान करने लगा। राजा के पुत्र ने साधु के विषय में

बतलाया। ये बड़े तपस्वी हैं। पूरे दिन में केवल एक बार भोजन करते हैं। गर्मी में पंचाग्नि जलाकर और जाड़ों में शीतल जल में खड़े होकर ईश–ध्यान करते हैं। क्या इनसे बड़ा कोई धर्मात्मा हो सकता है? राजा ने उनका भी समुचित आतिथ्य किया और तत्पश्चात् वे भी प्रस्थान कर गये।

चौथा पुत्र जब लौटा तो अपने साथ मैले–कुचैले वस्त्र पहने एक ग्रामीण को लेकर आया और बोला– ये एक कुत्ते के घाव धो रहे थे। मैं इन्हें नहीं जानता। आप ही पूछ लीजिए धर्मात्मा हैं या नहीं?

राजा ने पूछा– क्या तुम धर्म–कर्म करते हो?

ग्रामीण ने राजा को पहले प्रणाम किया और फिर बोला– मैं तो अनपढ़ हूँ। धर्म–कर्म के विषय में कुछ नहीं जानता। हाँ, कोई बीमार हो तो उसकी सेवा अवश्य कर देता हूँ। कोई भूखा अन्न मांगता है तो अन्न दे देता हूँ और कोई वस्त्रहीन वस्त्र मांगता है तो अपने तन से भी उतारकर उसे दे देता हूँ।

तब राजा ने 'यही सबसे बड़ा धर्मात्मा है' कहते हुए अपने चौथे पुत्र का राज्याभिषेक की घोषणा की।

फिर राजा ने कहा– स्वार्थरहित सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। बिना स्वार्थ के सेवा होने पर ही 'धर्मात्मा' के सही मायने सिद्ध होते हैं और तभी सच्चा पुण्य प्राप्त होता है।

जानकारी : अर्चना सोगानी

बिन आँखों की मछली

आपको जानकर अचरज होगा कि इस संसार में मछली की एक प्रजाति ऐसी भी पाई जाती है, जिसकी आँखें नहीं होती। एक तरह से उसे कुछ दिखाई नहीं देता लेकिन फिर भी वह अपनी बुद्धि से आसानी से शिकार कर पेट भर लेती है।

'किव' नामक यह मछली मेक्सिको की गहरी नदियों में पाई जाती है, यह एक से चार फुट तक लम्बी होती है। आखिर यह मछली आँखें न होते हुए भी कैसे शिकार कर लेती है। आओ, यही कुछ जानते हैं।

दरअसल इस मछली के शरीर में 'हाइड्रोडायनामिक इमेजिंग' की क्षमता अधिक होती है। इसी कारण यह हर चीज का पहले से ही सही अनुमान लगाने में माहिर होती है। यूं तो सभी तरह की मछलियों के शरीर में एक 'लैटरल लाइन' होती है, जो उनके आसपास होने वाली किसी भी तरह की हलचल और पानी के बहाव का पता बताती है, लेकिन 'किव मछली' में यह सबसे ज्यादा विकसित होती है। इसके माध्यम से वह अपने रास्ते में आने वाली हर रूकावट का अनुमान आसानी से लगा लेती है और अपने शिकार की पहचान भी कर लेती है। इसके शरीर के आसपास जैसे ही पानी के बहाव में परिवर्तन आता है, नये हालात का 'मेप' उसके मस्तिष्क में कुदरती तैयार हो जाता है। फिर अपने मुख से एक तरह की गंध छोड़कर शिकार को अचेत कर तुरन्त निगल लेती है।

यह मछली 24 घंटे के सफर में तकरीबन 150 से 200 तक सूक्ष्म जलीय जीव चट कर जाती है। हाँ, इसकी एक खास विशेषता भी है कि यह जल में स्वतंत्र विचरण करना पसन्द करती है।

इस मछली की कुछ प्रजातियां उत्तरी अमेरिका की गहरी विशाल नदियों में पाई जाती है। ये फुट भर की होती है तथा इनके शरीर में सिर्फ एक सूक्ष्म आँख 'राई के दाने' के बराबर होती है। दिन में इसे कुछ दिखाई नहीं देता परन्तु शाम ढलते ही आँख की चमक कुदरती तेज हो जाती है। यह अपनी सूक्ष्म आँख से आँसू की नन्हीं–नन्हीं बूंदें गिराती है, जिसकी खुशबू से आसपास के छोटे–छोटे जीव इसके पास चले आते हैं और ये उन्हें मुँह खोलकर तुरन्त चट कर जाती है।

उत्तरी कोरिया की 'सिनची नदी' में इस प्रजाति की मछली का रंग काला–सफेद होता है। इसकी पीठ पर दो छोटी–छोटी आँखें होती हैं। अपने शिकार को देखते ही यह दोनों आँखें बंद करके सुस्त हो जाती है। जब शिकार इसके पास आकर इसके शरीर पर चढ़ने की कोशिश करता है, तब यह बड़ी फुर्ती से अपना शरीर उल्टा कर उसे दबोच लेती है।

बाल कविता : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

हरी सब्जियां खाएं

आओ हरी सब्जियां खाएं,
पहलवान गामा बन जाएं।

मूली लाकर गाजर लाकर,
पालक हरी–हरी मंगवाकर,
लाल टमाटर लाल चुकन्दर,
खाएं शलजम को पकवाकर,
बथुआ चौलाई खाकर हम–
आयरन और विटामिन पाएं।

बनवाएं सोया–मेथी का,
साग जायकेदार सलोना,
आलू–गोभी मटर मिलाकर,
तरकारी हो एक भगौना,
लहसुन पड़ा साग सरसों का–
खाकर सर्दी दूर भगाएं।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

भूल ना जाना

हरी–भरी सब्जी खाओगे,
स्वस्थ बच्चे कहलाओगे।
मीठी टॉफी यदि खाओगे,
दांत सड़े कीड़े पाओगे।।

भूल ना जाना मंजन–स्नान,
प्रातः उठ कर करो व्यायाम।
लक्ष्य पर हो नित अपना ध्यान,
बड़ों को भी करो नित प्रणाम।।

समय कभी न व्यर्थ खोना है,
देख कष्ट को ना रोना है।
कर्तव्य पथ पर चलना सदा,
सुपथ से विचलित न होना है।।

मैं बेईमान नहीं

ईरान में एक गड़रिया था। उसका नाम रहीम था। वह बहुत ईमानदार था और मुसीबत में हर आदमी की मदद करता था। वह दिनभर अपनी भेड़ें चराया करता था लेकिन जब भी कोई उसे मदद के लिए बुलाता, वह पहुँच जाता। धीरे–धीरे उसकी ईमानदारी, नेकदिली पूरे क्षेत्र में फैल गई। इतनी प्रसिद्धि मिलने के बाद भी उसमें जरा–सा घमण्ड नहीं आया। वह यह कभी नहीं भूला कि वह एक मामूली गड़रिया है, जो भेड़ें चराकर अपनी जीविका चलाता है।

धीरे–धीरे उसकी ख्याति ईरान के सुलतान (बादशाह) तक पहुँची। उस समय बादशाह के कुछ मंत्री विद्रोह की तैयारी कर रहे थे, जिससे सुलतान को गद्दी का खतरा पैदा हो गया था।

सुलतान ने रहीम को अपने दरबार में बुलवाया। कुछ देर की बातचीत के बाद ही वह रहीम का प्रशंसक बन गया। उसने रहीम को उसी छोटे–से प्रांत का जागीरदार बना दिया, जहाँ का वह रहने वाला था।

रहीम बोला– हुजूर! मैं एक मामूली गड़रिया हूँ। मैं क्या जानूं कि शासन कैसे किया जाता है।

सुलतान ने कहा– तुममें ईमानदारी है, लगन है। यही तुम्हारा सबसे बड़ा गुण है। इसके सिवाय तुम हर आदमी की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हो। एक अच्छे शासक में यही गुण होने चाहिए।

आखिरकार रहीम ने सुलतान की बात मान ली। लेकिन उसे इसकी खुशी नहीं हुई। सुलतान के मंत्रियों को यह बात खल गयी कि एक मामूली गड़रिया जागीरदार बन गया।

अपने ही इलाके के रहीम गड़रिये को अपना जागीरदार बना देख कर, वहाँ के लोग फूले नहीं समाये। लेकिन रहीम में जरा भी घमण्ड नहीं आया। वह हमेशा की तरह सादा खाना खाता, जिससे उसे याद रहे कि वह एक मामूली गड़रिया है। रहीम घोड़े पर सवार हो गाँव–गाँव जाता और लोगों की शिकायतें दूर करता। उसके पूरे इलाके में एक तरह से खुशहाली छा गई। सुलतान को भी यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि उसने एक अच्छे आदमी का चुनाव किया है।

लेकिन कुछ दिनों के बाद ही लोगों के मन में एक बात खटकने लगी कि रहीम जब सरकारी दौरे पर जाता, तो उसके पीछे एक टट्टू भी जाता था, जिस पर एक छोटा–सा बक्सा लदा होता था और रहीम उसका ध्यान जरूरत से ज्यादा रखता। कुछ लोगों ने यह कहना शुरू किया कि रहीम ने उसमें सोना–चाँदी और हीरे–जवाहरात बटोर रखे हैं। यह अफवाह इतनी तेजी से फैली कि गाँववाले भी यह विश्वास करने लगे कि रहीम उन्हें लूटकर अपने को धनी बना रहा है। अब लोगों का विश्वास उस पर से उठने लगा।

जब सुलतान ने यह बात सुनी तो उसे बहुत दुख हुआ, लेकिन उसने लोगों की कही बातों का विश्वास करने के बजाय खुद उसका पता लगाना उचित समझा। एक दिन सुलतान उस जगह पहुँचा, जहाँ रहीम अपना तंबू लगाये हुए था। सुलतान के आने की खबर सुनकर रहीम उनकी अगवानी के लिए बाहर निकला। उसके साथ ही एक नौकर टट्टू को लिये हुए आया, जिस पर एक बक्सा रखा हुआ था। रहीम ने झुक कर सुलतान का अभिवादन किया, लेकिन सुलतान की नजर टट्टू पर टिकी हुई थी। रहीम समझ नहीं पाया कि आखिर बात क्या है?

सुलतान ने क्रोध में कहा– मैंने तुम्हें गरीबों की सेवा के लिए जागीरदार बनाया था, उन्हें लूटकर अपना घर भरने के लिए

नहीं। अब तुम इस पद के लायक नहीं रहे क्योंकि तुमने गरीबों का खून चूसा है। इस बक्से को खोलकर दिखाओ कि तुमने कितना धन लूटकर बटोर लिया है।

रहीम ने चुपचाप बक्से को खोल दिया। सुलतान को यह देखकर बहुत हैरानी हुई कि उसमें से एक पुरानी कमीज निकली।

रहीम ने कहा– हुजूर! यही मेरा खजाना है। इसे आप चाहे सोना–चाँदी कह लें या हीरे–जवाहरात। मैं इसे हमेशा अपने साथ इसलिए रखता हूँ ताकि यह न भूल जाऊँ कि मैं एक मामूली गड़रिया हूँ।

सुलतान की आँखें भर आईं। उसने रहीम को गले से लगाते हुए कहा– मुझे माफ करना। मैंने तुम पर खामखाह शक किया। तुम हमारे राज्य के सबसे ईमानदार आदमी हो।

उसके बाद सुलतान ने रहीम को और भी बड़ा जागीरदार बना दिया। लेकिन बड़े से बड़े पद पर पहुँच कर भी रहीम ने ईमानदारी नहीं छोड़ी।

असल का नकल

बच्चों, हमारे वैज्ञानिक अन्वेषणकर्त्ता भी किसी भी खोज के लिए कोई आधारभूत संरचना के बारे में भी पूर्णरूपेण से परखते रहे हैं जैसे–

- ✯ वायुयान की संरचना करते समय वे उड़ने वाले पक्षियों के आधार प्रयोग आधारभूत रूप में किये।
- ✯ जलीय जंतुओं के विशिष्ट आकार का उपयोग हमारे वैज्ञानिक इंजीनियर जलयान बनाने में किया।
- ✯ फेफड़ों की कार्यविधि के अनुसार ही वायुसूचक पम्प का निर्माण किया।
- ✯ कैमरे की बनावट में आँखों की रचना का ध्यान रखा गया।
- ✯ मकानों के गार्डर चौपायों के शरीर में रीढ़ की हड्डी की भूमिका को ध्यान में रखकर उपयोग किया।
- ✯ चमगादड़ की श्रवण क्रिया की नकल का रडार बनाने में उपयोग किया गया।
- ✯ जंतुओं की पूंछ की नकल से अनेकों ब्रुश का निर्माण किया गया।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

गोवा और बिहार का राजकीय पशु : गौर

गौर गाय परिवार का सबसे बड़ा और शक्तिशाली प्राणी है। यह संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, यूरोप के अनेक भागों, चीन के कुछ भागों, कम्बोडिया, लाओस, वियतनाम, थाईलैंड, मलाया, म्यामार, यूनान एवं भारत में पाया जाता है। भारत में यह हिमालय के तराई वाले भागों, मध्य और दक्षिण–पूर्वी भारत के पहाड़ी क्षेत्रों, बंगाल और आसाम के जंगलों, दक्षिणी भारत के पश्चिमी घाट के वर्षा वनों एवं मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के जंगलों में मिलता है। एक समय था जब भारत में हजारों की संख्या में गौर पाये जाते थे, किन्तु अब केवल चुने हुए राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और चिड़ियाघरों में ही शेष बचे हैं।

गौर मूलतः पहाड़ों पर रहने वाला प्राणी है। यह चारागाहों की तलाश में भले ही नीचे आ जाता हो, किन्तु इसे पर्वतीय क्षेत्रों में रहना अधिक पसन्द है। भारतीय गौर पहाड़ी क्षेत्रों में निचले भागों से लेकर 1800 मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में अधिक मिलते हैं। हिमालय के पर्वतीय भागों में पाये जाने वाले गौर कभी भी 1800 मीटर से अधिक ऊँचाई पर नहीं जाते हैं। गौर की तीन प्रमुख जातियां हैं– अमरीकी गौर, यूरोप का गौर और भारतीय गौर। इन तीनों में अमरीकी गौर सबसे बड़ा और शक्तिशाली होता है। इसकी कंधों तक की ऊँचाई लगभग 1.75 मीटर और शरीर का वजन 1 टन तक होता है। अमरीकी गौर और यूरोप के गौर के शरीर पर सर्दियों के मौसम में घने बालों की एक मोटी–सी पर्त आ जाती है, जो ठण्डक से इसकी रक्षा करती है। सर्दियां समाप्त होने के बाद बालों की यह पर्त स्वतः समाप्त हो जाती है और गौर अपने सामान्य रूप में आ जाता है।

गौर समूह में रहने वाला वन्य प्राणी है। इसके समूह में मादाओं और बच्चों की संख्या अधिक होती है। सामान्यतया गौर के एक समूह में एक अथवा दो नर तथा शेष मादाएं और उनके बच्चे होते हैं। गौर के समूह में सदस्यों की संख्या हमेशा बदलती रहती है। जनवरी–फरवरी के महीनों में एक समूह में सदस्यों की संख्या लगभग 5–6 होती है। यह संख्या अप्रैल–मई में बढ़कर 9–10 तक पहुँच जाती है। मई के बाद समूह बिखरने लगता है और जून के अन्त तक पूरा समूह बिखर जाता है तथा सभी सदस्य अलग–अलग रहने लगते हैं। कभी–कभी समूह दो भागों में बँट जाता है। एक भाग में केवल नर गौर रहते हैं तथा दूसरे समूह में मादाएं और बच्चे।

नर गौर मादा से बड़ा और शक्तिशाली होता है तथा यही समूह का निर्माण करता है, किन्तु यह देखा गया है कि प्रवास एवं सुरक्षा आदि के

समय सर्वाधिक आयु की एक अनुभवी मादा गौर समूह का नेतृत्व करती है। कुछ लोग गौर और जंगली भैंसे को एक ही वन्यप्राणी समझते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। गौर और जंगली भैंसा दोनों अलग–अलग जाति के जीव हैं। गौर गाय परिवार का जीव है और जंगली भैंसा भैंस परिवार का जीव है। इन दोनों की शारीरिक संरचना में भी बहुत अन्तर होता है।

भारत में पाये जाने वाले सभी गौर लगभग एक ही आकार और रंग–रूप के होते हैं। भारतीय गौर की कंधों तक की ऊँचाई 1.50 मीटर से लेकर 1.80 मीटर तक लम्बाई लगभग 3 मीटर और शरीर का वजन 800 किलोग्राम से 900 किलोग्राम के मध्य होता है। इसकी पूँछ 60 सेंटीमीटर से 90 सेंटीमीटर तक लम्बी होती है एवं इसके अन्त में बाल होते हैं। गौर का रंग काला अथवा मटमैलापन लिये हुए भूरा–सा होता है। अतः दूर से देखने पर यह जंगली भैंसे की तरह दिखाई देता है। इसके चारों पैरों में घुटनों के नीचे का भाग सफेद होता है। इसी विशेषता के आधार पर इसे सरलता से पहचाना जा सकता है। गौर के सींग अर्धचन्द्राकार मुड़े हुए तथा मजबूत होते हैं। इसके सींगों का घेरा सामान्यतया 85 सेंटीमीटर से 1 मीटर तक होता है, किन्तु कभी–कभी इससे बड़े सींगों वाले गौर भी देखने को मिल जाते हैं।

मादा गौर की शारीरिक संरचना नर के समान ही होती है, किन्तु मादा नर से छोटी होती है। इसके सींग भी नर से छोटे होते हैं। नर और मादा गौर के सींगों में एक विशेष अन्तर होता है। नर गौर के सींगों की नोकें अर्थात् इनके सिरे ऊपर की ओर होते हैं जबकि मादा के सींगों की नोकें एक–दूसरे के आमने–सामने होती हैं तथा कभी–कभी तो ये एक दूसरे को छूने लगती हैं अथवा एक–दूसरे के आगे निकल जाती हैं।

नर गौर की मांसपेशियां बड़ी मजबूत और शक्तिशाली होती हैं जिससे इसकी शारीरिक क्षमता बहुत अधिक बढ़ जाती है। इसकी आँखों का रंग कत्थई होता है एवं इसकी दृष्टि और श्रवणशक्ति बड़ी कमजोर होती है। गौर की घ्राणशक्ति बड़ी तेज होती है। इसकी घ्राणशक्ति का अनुमान इसी बात से लगाया जाता है कि इसे शेर एवं इसी प्रकार के हिंसक जीवों की गंध आधा किलोमीटर दूर से ही मिल जाती है और यह सतर्क हो जाता है।

गौर पूर्णतया शाकाहारी है और प्रायः दिन के समय ही भोजन करता है। यह अपने समूह के साथ भोजन की खोज में घने जंगलों से बाहर निकलकर मैदान में आता है और धूप तेज होने के पहले तक भोजन करता है। इसके बाद यह किसी सुरक्षित छायादार स्थान पर विश्राम करता है। सूरज ढलने के बाद शाम को फिर चरना आरम्भ करता है और अंधेरा होने के बाद तक चरता रहता है। गौर का प्रमुख भोजन मैदानों में पायी जाने वाली घास है। इसके साथ ही यह बांस की पत्तियां और उनकी कोपलें, अन्य वृक्षों की पत्तियां, वृक्षों की छालें तथा विभिन्न प्रकार की जंगली वनस्पतियां आदि बड़े चाव से खाता है।

गौर की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह अपने समूह के सदस्यों के साथ ही चरता है। इसके समूह के साथ यदि अन्य गौर समूह आ जाये तो भी यह आराम से चरता रहता है, किन्तु हाथी को छोड़कर अन्य जीवों– हिरन, गवय, जंगली बकरियों आदि के साथ यह कभी नहीं चरता। दक्षिण भारत के पश्चिमी घाट के जंगलों में गौर और हाथी एक साथ चरते हुए देखे जा सकते हैं।

★ ★ ★

कविता : डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

धरती का शृंगार है पेड़

आओ मिलकर बाग लगायें,
सुन्दर नये लगायें पेड़।
तेज धूप सदा सहता है,
सबको छाया देता पेड़।।

जाड़ा गरमी बरसातों में,
नहीं तनिक अकुलाता पेड़।
पथिकों को ये छाया देकर,
अपने पास बुलाता पेड़।।

आम आंवला जामुन कटहल,
रोपो मधुर फलों के पेड़।
औषधि जड़ी–बूटियों वाली,
देता रहता है हरदम पेड़।।

तरह–तरह के फल देता है,
मुझको स्वस्थ बनाता पेड़।
सबको ऑक्सीजन देता है,
कार्बन खुद पी लेता पेड़।।

नीम–आंवला–पीपल पाकर,
रस की धार बहाता पेड़।
शीतल हवा हमें देती है,
धरती का शृंगार है पेड़।।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

नन्हा पौधा

नन्हा पौधा बनकर पेड़,
देता है हरियाली ढेर।

फल–फूल नित हमको बांटे,
रोग–दोष सब यही छांटे।

आम–पीपल–नीम हो बेर,
देता है हरियाली ढेर।

छांव इनकी मिले भरपूर,
कभी न हों ये हम से दूर।

पौधे लगाओ न हो देर,
देता है हरियाली ढेर।

कोमल पत्ते नरम डाली,
राग सुनाती पीहू काली।

मत करो कभी इनसे छेड़,
देता है हरियाली ढेर।

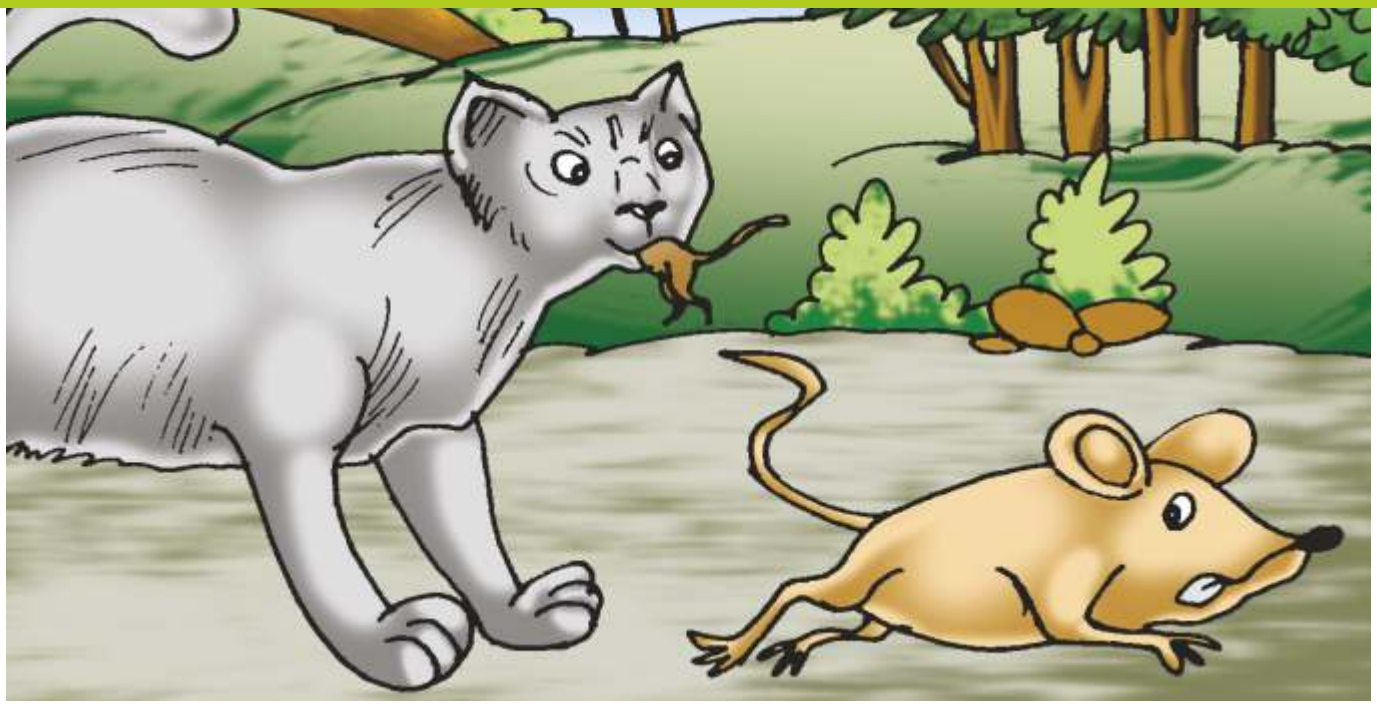

बाल कहानी : गोविन्द भारद्वाज

छोटू चूहे की बहादुरी

नंदनवन के चूहे एक जंगली बिल्ली से परेशान थे। वह मोटी बिल्ली प्रतिदिन चूहों का शिकार करती थी। उसका आतंक सारे चूहे समाज पर फैला हुआ था। रोजाना अपनी घटती संख्या से नंदनवन के चूहे चिन्तित थे।

एक दिन एक समझदार चूहा उनके पास आया और बोला– ''भाइयों! आज मैं आपके लिए बिल्ली से पीछा छुड़ाने की तरकीब लाया हूँ। यदि आप सब इस तरकीब को अपनाओगे तो अवश्य ही बिल्ली के आतंक से मुक्ति मिलेगी।''

यह सुनकर सारे भयभीत चूहे खुशी से उछलने लगे। सब एक स्वर में बोले– हमें जल्दी बताओ तरकीब।

–तो फिर सुनो ध्यान से।– समझदार चूहे ने कहा।

वह बोला– हमें एक घण्टी बिल्ली के गले में बांधनी पड़ेगी ताकि उसके आने की खबर हमें लग जाए और सब अपने–अपने बिलों में घुस जाएं।

यह सुनकर एक मोटू चूहा बोला– क्या बात करते हो भाई! सदियों से हम यह उपाय करने की सोचते आए हैं। भला, आज तक कोई पीढ़ी यह उपाय करने में सफल हुई है। मौत के सामने कौन जाना चाहेगा?– उसकी बात सुनकर सब चूहे आपस में कानाफूसी करने लगे।

इतने में छोटू नाम के चूहे ने हाथ उठाकर कहा– भाइयो, आप सब निश्चिन्त

हो जाओ। मैं अवश्य ही बिल्ली के गले में घण्टी बाँधकर आऊँगा। यह मेरा वादा है।

उसकी बहादुरी देखकर सभी उपस्थित चूहों ने छोटू चहू को घण्टी बांधने की इजाजत दे दी।

दूसरे दिन छोटू चूहा जंगली मोटी बिल्ली के घर पहुँच गया। उसने घर के बाहर से आवाज लगाई– मौसी घर में हो क्या?

चूहे की आवाज सुन बिल्ली ने सोचा– आज सुबह–सुबह किसका मुँह देखा जो भोजन बिना शिकार किये ही मेरे घर आ गया।

वह बाहर आई। छोटू ने हाथ जोड़कर कहा– मौसी हम मुसीबत में हैं।

–मेरे सिवाय तुम्हारे लिए कौन मुसीबत खड़ी कर सकता है?– मोटी बिल्ली ने तपाक से कहा।

छोटू चूहा बोला– मौसी तुम्हारे अलावा एक मोटी बिल्ली, बिल्कुल तुम्हारे जैसी हमें आकर खा जाती है। सुना है वह पास के जंगल से आती है।

–तो मैं क्या कर सकती हूँ?– वह बोली।

–मैं चाहता हूँ कि आप ही हमारा शिकार करें और कोई नहीं। मैं एक घण्टी लाया हूँ। यदि आप इसे गले में बांध लें तो हम सब इसके बजने पर आपके आने की खबर पा सकेंगे और बारी–बारी से आपके भोजन के लिए सामने आ जाएंगे।– छोटू ने घण्टी दिखाते हुए एक सांस में सब कह दिया।

मोटी बिल्ली ने छोटू के इस उपाय को मान लिया और अपने गले में घण्टी बंधवा ली। छोटू ने मोटी बिल्ली को धन्यवाद दिया और खुशी से उछलता हुआ लौट आया। सभी चूहों को उसकी कामयाबी से बड़ी राहत मिली।

अगले दिन बिल्ली जैसे ही उनके इलाके में आई। घण्टी की आवाज सुनकर सब चूहे बिल में घुस गये। बेचारी बिल्ली बिना शिकार किए लौट गई। कई दिन तक यूं ही चलता रहा तो वह भूख से मरने लगी। छोटू की चाल में फंसी बिल्ली ने अपनी मूर्खता को कोसते हुए दूसरे जंगल में जाने का फैसला कर लिया। उसके जाते ही सारे चूहे निडर होकर इधर–उधर घूमने लगे और इतना ही नहीं छोटू चूहे को सभी ने अपना सरदार चुन लिया।

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

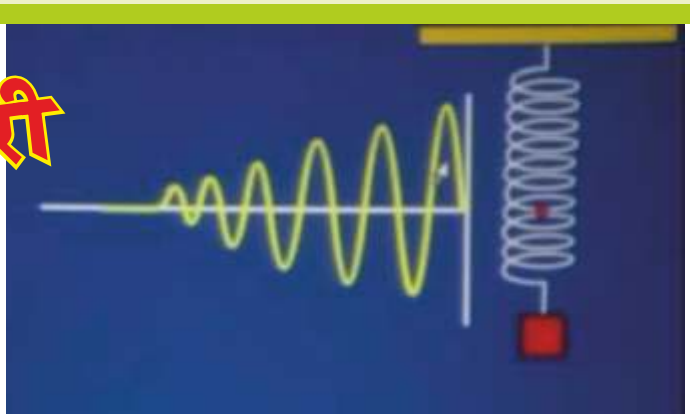

प्रश्न : तुम बहुत निकट से पढ़ने में कठिनाई क्यों अनुभव करते हो?

उत्तर : नेत्र लेंस अपनी क्षमता और गुणों के कारण फोकस दूरी को कुछ सीमा तक बदलता है। लेकिन एक निश्चित सीमा से नीचे तक यह फोकस दूरी को नहीं बदल पाता है। यदि कोई पुस्तक तुम्हारी आँख के बहुत निकट हो तो, इसमें इतना परिवर्तन नहीं होता कि उसे ठीक–ठाक देखने में सहयता दे। अतः तुम्हें बहुत निकट से पढ़ने में कठिनाई अनुभव होती है। ऐसा करने से आँखों पर दबाव पड़ता है और अक्षर धुंधले दिखाई पड़ते हैं।

प्रश्न : तारे भिन्न–भिन्न रंगों के क्यों दिखाई देते हैं?

उत्तर : रात्रि के समय आकाश में दिखाई देने वाले तारे पृष्ठीय तापमान के कारण ही भिन्न–भिन्न रंगों के दिखाई देते हैं। उनके रंग उनके तापमान को दर्शाते हैं। जो तारे लाल रंग के दिखाई देते हैं, उनका तापमान कम होता है। अधिक तापमान वाले तारे सफेद रंग के दिखते हैं। जिन तारों का तापमान बहुत अधिक होता है, वे नीले रंग के दिखाई देते हैं।

प्रश्न : रात्रि में तुम्हें तारे परिक्रमा करते हुए क्यों दिखाई देते हैं?

उत्तर : पृथ्वी अपने अक्ष (Axis) पर घूमती है लेकिन इसकी जानकारी तुम्हें नहीं हो पाती। तुम्हें ऐसा प्रतीत होता है कि तारे परिक्रमा कर रहे हैं क्योंकि जैसे–जैसे रात बीतती है, आकाश में उनकी स्थिति भी बदलती जाती है।

प्रश्न : पुलों के सिरों को रोलरों पर क्यों टिकाया जाता है?

उत्तर : पुलों के बड़े–बड़े भाग इस्पात के बने होते हैं। ये गर्मी में सूर्य की ऊष्मा पाकर फैलते हैं। ऐसी स्थिति में जिस दीवार पर पुल बना होता है, उस पर दबाव पड़ता है और सिकुड़न के कारण इसका रूप भी बिगड़ सकता है। अतः इससे बचने के लिए इस्पात के इन सिरों को रोलरों पर टिकाया जाता है ताकि ऊष्मा के प्रसार या सिकुड़न का कुप्रभाव पुलों पर न पड़े।

जानकारी : कमल सोगानी

हॉक की अनोखी उड़ान...

उत्तरी अमेरिका के घने जंगलों में 'हॉक' नामक एक अनोखा परिन्दा पाया जाता है। यह 4–5 फुट लम्बा होता है। चोंच 8–9 इंच लम्बी, आँखें गोल व लाल सुर्ख तथा दो छोटे–छोटे कान व तीन–तीन फुट के दो पंख होते हैं। इसका शरीर भूरा सफेद व पंख चितकबरे होते हैं। यह घने पेड़ों पर मजबूत घोंसला बनाता है। कभी–कभी यह ऊँची–ऊँची पहाड़ियों पर भी रहना पसन्द करता है।

संसार में इसकी दो दर्जन से भी अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं, जो भिन्न–भिन्न रंगों व भिन्न–भिन्न शक्लों की होती हैं। मादा का कद नर से कुछ बड़ा होता है।

हॉक की उड़ान भी बड़ी बेमिसाल है। इसकी उड़ने की क्षमता बहुत तेज होती है। यह दिनभर के सफर में बिना रूके–थके हजारों किलोमीटर की उड़ान आसानी से भर लेता है। इसका भोजन चूहे, पक्षियों के अण्डे, जंगली फल व सफेद मुलायम घास है। शहद का तो यह बड़ा दीवाना है। कई बार यह मधुमक्खियों के छत्ते उजाड़कर बड़े चाव से शहद चट कर जाता है।

यह अपने मजबूत घोंसलों का निर्माण एक तरह की जंगली घास से करता है। घोंसला बनाने में इसे 8 से 10 दिन का समय लगता है। इसकी मादा घोंसले में ही अंडा देती है। तीन सप्ताह में अंडा अपने आप तड़क जाता है और नन्हा ''हॉक'' घोंसले में फुदकने लगता है। इसके भोजन, पानी का इंतजाम घोंसले में ही किया जाता है। नर–मादा दोनों मिलकर इसकी रक्षा करते हैं। 90 दिनों उपरांत यह धीरे–धीरे उड़ान भरता है, फिर कुछ दिनों उपरांत खुद स्वतंत्र उड़ना शुरू कर देता है।

बाल कविता : कमलसिंह चौहान

पूनम का चाँद

आसमान में निकला चाँद,
पूनम का इठलाता चाँद।
तारे बिखरे मोती जैसे,
दर्पण से शरमाता चाँद।

जुगनू झींगुरों का मौसम,
बासंती फूलों का मौसम।
नदियों के तट देखो चमके,
उतरा नदी में देखो चाँद।

चमकी धरती फूलों संग,
हिरनी दौड़ी वायु संग।
बच्चे भी किलकारी मारे,
भीगा है ममता में चाँद।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

कहते चन्दा-मामा

चन्दा–मामा कहते सब से,
मेरे घर जब भी तुम आना,
सुंदर सुमन संग में लाना,
पर बारूद कभी न लाना।

प्यारे मीठे गीत सुनाना,
नफ़रत–बैर छोड़कर आना,
मुझे उदासी लगे न प्यारी,
बच्चो सी किलकारी लाना।

चन्दा–मामा कहते सब से,
मेरे घर जब भी तुम आना,
दंगा–फसाद छोड़ धरा पर,
हँसने वाली गुड़िया लाना।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

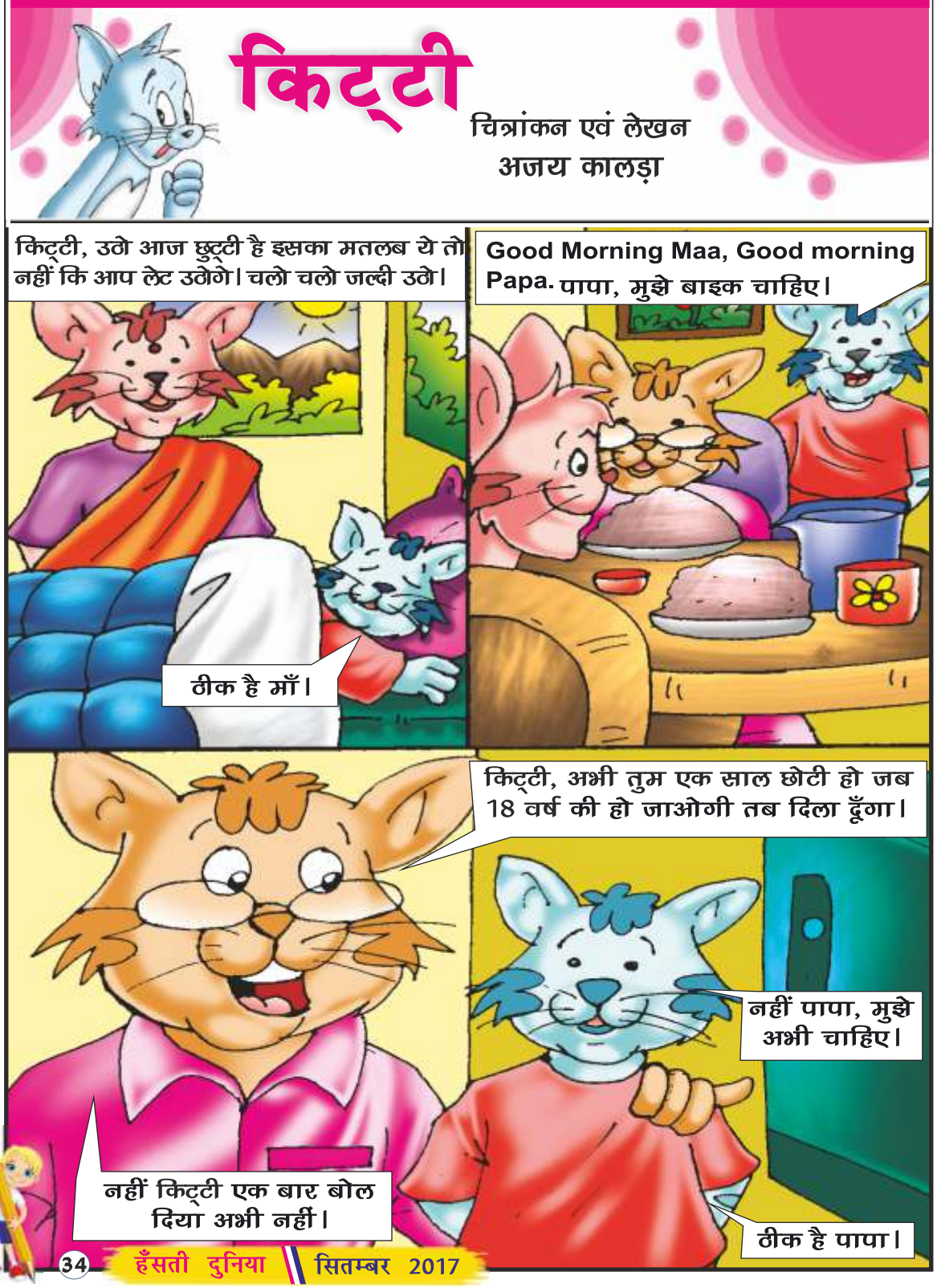

अगले दिन सुबह...
पापा मैं जा रही हूँ स्कूल, रीना और उसका भाई मुझे लेने आए हैं। हम गोलू की बाइक पर जा रहे हैं।
ध्यान से जाना।
रीना आज बाइक मैं चलाऊँगी प्लीज
भईया किट्टी बाइक चलाने दो।
तो ठीक है चला ले पर ध्यान से चलाना।
अरे कितना मज़ा आ रहा है। वाह!

बाइक रोको। बाइक रोको। आप अपना लाइसेंस दिखाओ।
जी वो तो नहीं है, Sir Please मुझे माफ कर दो।
आपको हमारे साथ थाने चलना होगा।
रोते हुए, Sir Please मुझे माफ कर दो Please मैं आगे से कभी ऐसा नहीं करूँगी।
ठीक है मैं तुम्हे थाने नहीं ले जाता। अपने पिता जी का Mobile No. दो।
जी वो जी, 00000000 ।

हैलो मिस्टर Pappu आप जंगल चौक आ जाइए। आपकी बेटी हमारी हिरासत में है। मैं इंस्पैक्टर Pingu बोल रहा हूँ।
जी Sir, क्या किया मेरी बेटी ने बताईए क्या हुआ।
ये बाइक चला रही थी और इसके पास लाइसेंस नहीं है। आप ऐसे बच्चों को बाइक दिलाते ही क्यों हैं।
जी ये इसकी नहीं है। Sir Please इसे माफ कर दीजिए। मैं आपसे माफी माँगता हूँ।
जी Sir मैं आगे से कभी भी ऐसा नहीं करूँगी।
जी आप एक अच्छे व्यक्ति लगते हैं इसलिए मैं इसे छोड़ रहा हूँ, पर आगे से कभी ऐसा हुआ तो नहीं छोड़ूँगा।
कभी कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपको या आपके माता-पिता को शर्मिंदा होना पड़े।

जानकारी : कमल सोगानी

हिमालय का दुर्लभ वृक्ष : च्यूर

हिमालय की हरी–भरी वादियों में 'च्यूर' नामक एक अनोखा पेड़ पाया जाता है जो गुड़, शहद और घी देता है। इस पेड़ का वैज्ञानिक नाम 'बुटारसिया बार्सिया' है। यह 25 से 35 फुट तक लम्बा होता है। इसमें अक्टूबर से लेकर फरवरी तक फल लगते हैं। ये फल एक लाल फूल से बनते हैं। इसमें ये फूल सितम्बर माह से ही खिलना शुरू हो जाते हैं। मधुमक्खियां इसके फूलों से खुराक लेकर शहद बनाती हैं। इसका फल मीठा होता है। इसके फूलों के पराग से गुड़ भी बनाया जाता है। हाँ, यह गुड़ ताड़ के वृक्ष के गुड़ की तरह होता है। फल के अन्दर से निकलने वाले काले–काले बीजों से तेल भी निकलता है। इस तेल का रंग घी की तरह श्वेत होता है। इस तेल में घी जैसे गुण मौजूद हैं। इस तेल का उपयोग भोजन में ताकत बढ़ाने के लिए किया जाता है।

यूं इस पेड़ की पत्तियां भी बड़ी गुणकारी हैं। जुकाम होने पर पत्तियों को मसलकर सूंघने से जुकाम का असर गायब होने लगता है। इन पत्तियों को पानी में मसलकर स्नान करने से बदन की खुजली भी शांत होती है। इस पेड़ की मोटी शाख में चार–पांच इंच लम्बा छेद करने से 24 घंटे के उपरांत गोंद की भी प्राप्ति होती है। यह गोंद सेहत के लिए कई दृष्टि से फायदेमंद है। इससे त्वचा चिकनी होती है व पेट के कई रोग भी दूर होते हैं।

इस वृक्ष की सूखी लकड़ियों से कई कलात्मक फर्नीचर और खिलौने भी बनते हैं, जिनमें कभी कीड़े नहीं लगते। कुदरत का यह अजूबा वृक्ष वर्तमान में दुर्लभता की श्रेणी में है क्योंकि चोरी चुपके इसका सफाया तेजी से हो रहा है।

इस प्रजाति के कुछ पेड़ दक्षिण अफ्रीका के बीहड़ जंगलों में भी पाये जाते हैं। ये पेड़ औसतन बौने होते हैं तथा इनके पत्ते चौड़े–चौड़े और रंग–बिरंगे होते हैं। इन वृक्षों में सितम्बर से जनवरी तक नीले, सफेद व भूरे फूल खिलते हैं। इन फूलों से एक तरह का चिपचिपा पदार्थ निकलता है जो सूखकर गुड़ बन जाता है। 'डॉनअरिया' प्रजाति के इन पेड़ों से घी भी मिलता है। जिन पेड़ों में गुलाबी फूल खिलते हैं उनकी शाखाओं में छेद करने से 15–20 दिनों में शुद्ध प्राकृतिक घी मोम की तरह जम जाता है, इसे पिघलाकर खाने के काम में लिया जाता है।

'च्यूर' से मिलता–जुलता एक वृक्ष ब्राजील के जंगलों में भी पाया जाता है। 'डिओरिया' नामक यह वृक्ष 13 से 18 तक फीट लम्बा होता है। इसके पत्ते छोटे और नुकीले होते हैं। हर वर्ष अप्रैल–मई में नारंगी जैसे फल लगते हैं। इन फलों को फोड़ने पर एक चिपचिपा पदार्थ निकलता है, जो शहद की तरह मीठा होता है। लोग इस फल के चिपचिपे पदार्थ को दूध में घोलकर पीते हैं, इससे दूध मीठा तो होता ही है साथ ही उसका स्वाद भी दुगना हो जाता है। कई बार ये फल पेड़ पर ही सूख ही जाते हैं। फलों के अन्दर का शहद सूखकर गुड़ जैसा बन जाता है। यह गुड़ भी कई चीजों को स्वादिष्ट बनाने के काम आता है।

दक्षिण अमेरिका के जंगलों में 'चांदी का अंडा' नामक वृक्ष पाया जाता है। यहाँ के

कृषि वैज्ञानिक इसे वनस्पति जगत का 'सिल्वर एग' कहते हैं। दरअसल, इस वृक्ष में अंडे की आकृति के फल लगते हैं, जिन्हें फोड़ने पर पानी निकलता है। यह पानी शुद्ध जल की तरह होता है। इसे पीने से पेट के कई रोग दूर होते हैं। बच्चो के शारीरिक विकास के लिए इन फलों का पानी बेहद फायदेमंद है। कई लोग इसे 'जंगली नारियल' भी कहते हैं।

बाल कहानी : वैदेही शर्मा

चीकू खरगोश फिर हार गया

नन्दनवन में शाम को वन के बहुत से जानवर एकत्र हुए तो चीकू खरगोश उछल–उछलकर शहर के किस्से सुनाने लगा। चीकू खरगोश कुछ दिन पहले अपने मामा के घर गया था। मामा के घर उसने टेलीविजन में कोई फिल्म देखी तो वहाँ से लौटकर डींगें मारने लगा।

चीकू को बार–बार उछलता और जोर–जोर से बोलता देखकर कालू कछुवे ने कहा– चीकू भाई! टेलीविजन पर फिल्म देखने की इतनी डींगें मत मारो। हम भी कभी शहर जाएंगे तो टेलीविजन पर फिल्म देख लेंगे।

''तुम शहर जा ही नहीं सकते। अरे, आज चलोगे तो कई महीनों में शहर पहुँचोगे।'' चीकू ने कहा।

''चीकू भाई! तुम्हें अपने तेज दौड़ने पर बहुत गर्व है। याद करो, एक बार मेरे दादा जी ने तुम्हारे दादा जी को दौड़ में हरा दिया था।''

''अरे! वह तो बहुत पुरानी बात है। अब तुम मेरे साथ दौड़ लगाकर देख लो। मैं तुम्हें कुछ मिनटों में हरा दूँगा।'' चीकू ने कहा।

''ठीक है। तुम्हें अपने दौड़ने पर गर्व है तो कल सुबह जंगल के किनारे से नदी किनारे तक दौड़कर देख लेते हैं।'' कालू ने कहा।

चीकू खरगोश और कालू कछुवे की दौड़ पक्की हो गई।

अगले दिन नन्दनवन के बहुत से जानवर दौड़ देखने के लिए जंगल के किनारे एकत्र हो गए। कुछ जानवर नदी किनारे जाकर खड़े हो गए। समय पर दौड़ शुरू हुई। चीकू कुछ ही देर में तेजी से दौड़कर बहुत दूर चला गया। कालू भी धीरे–धीरे नदी की ओर चलने लगा।

बहुत दूर जाकर चीकू ने पलटकर देखा। उसे कहीं भी कालू दिखाई नहीं दिया। आम के एक पेड़ के नीचे खड़े होकर चीकू आराम करने लगा। तभी उसने आम के पेड़ पर बड़े–बड़े आम लटकते देखे। चीकू के मुँह में पानी भर आया लेकिन पेड़ पर लगे आम तोड़ना बहुत मुश्किल था। खरगोश को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था। तभी उसे कालू का ध्यान आया और वह तेजी से नदी की ओर दौड़ने लगा।

तेजी से दौड़ते हुए चीकू एक खेत के पास पहुँचा। उस खेत के पास लकड़ी की एक सीढ़ी पड़ी थी। तभी चीकू के मन में एक बात आई, ''यदि मैं इस सीढ़ी को उठाकर आम के पेड़ के पास ले जाऊं तो सीढ़ी की सहायता से पेड़ पर चढ़कर खुद मजे से आम खा सकता हूँ। जब तक कालू यहाँ पहुँचेगा मैं पेड़ से उतरकर तेजी से दौड़कर नदी किनारे पहुँच जाऊँगा। पेड़ पर चढ़कर मजे से आम खा लूंगा और दौड़ भी जीत जाऊँगा।''

आम खाने की बात सोचकर चीकू सीढ़ी उठाकर पेड़ के पास पहुँचा और सीढ़ी लगाकर पेड़ पर चढ़कर मजे से आम खाने लगा। आम खाने के चक्कर में चीकू कालू को बिल्कुल भूल गया।

आम खाने में चीकू इतना खो गया कि कालू पेड़ के पास से निकलकर आगे चला गया लेकिन चीकू को कुछ पता नहीं चला।

आम खाकर चीकू पेड़ से नीचे उतरा। कालू को आसपास कहीं नहीं देखकर मन ही मन खुशी से उछलता चीकू नदी की ओर दौड़ने

लगा। नदी किनारे पहुँचकर चीकू ने कालू को देखा तो उसे पसीने आ गए। आम खाने के चक्कर में चीकू कालू से हार गया था।

नन्दनवन के जानवरों ने फूलों का हार पहनाकर कालू का स्वागत किया।

लालच बुरी बला है। आम खाने के लालच में चीकू खरगोश फिर हार गया। ●

जानकारी : डॉ. विनोद गुप्ता

एक पेड़ पर दो प्रजातियों के फल!

आपने अब तक एक पेड़ पर उसी प्रजाति के फल लगते देखा–सुना है। लेकिन क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि दो प्रजातियों के फल एक ही पेड़ पर लगे हैं। है न आश्चर्य की बात!

एक ऐसा पेड़ जिस पर आलूबुखारा और सेब साथ–साथ लगते हैं। यह सुनकर शायद आपको आश्चर्य हो सकता है, किंतु यह सौ फीसदी सही है कि वोरसेस्टर के केमिला बोविट्ज गार्डन में एक ऐसे पेड़ की खोज कर ली गई है, इसकी कुछ टहनियों पर स्वादिष्ट सेब लगते हैं जबकि कुछ टहनियों पर आलूबुखारे।

इस बगीचे में पाया जाने वाला पेड़ लगभग 25 साल पुराना है लेकिन कोई यह नहीं जानता कि उसे किसने लगाया है। इसके फूलों को केंट हार्टिकल्चर शोध संस्थान ने इस अबूझ पहेली को सुलझाने के लिए परीक्षण के लिए भेज दिया गया। इस पेड़ में इस बात के कोई सबूत नहीं मिलते कि इसकी कलम लगाई गई हो। साथ ही विशेषज्ञों का कहना है कि इस प्रकार की कलम लगाना असंभव है। कुछ समय पहले इस मकान में आने वाली श्रीमती बोविट्ज का कहना है कि मैंने सबसे पहली चीज यह अनुभव की कि कितने सुन्दर बोर इस पेड़ पर आ रहे हैं जबकि दूसरी इस अप्रत्याशित बात को अनुभव किया कि पेड़ के एक तरफ सफेद बोर आ रहा है जबकि दूसरी तरफ लाल बोर आ रहा है। इस बात का बोविट्ज के पड़ोसी इवान ने सबसे पहले अनुभव किया कि इस पेड़ में कुछ ऐसे लक्षण है जो कि अपवाद हैं।

सफेद बोर वाली टहनियां जो कि घर की तरफ थीं। उनमें हरे छोटे सेब लगते हैं जबकि बगीचे की सामने वाली टहनियों में आलूबुखारा। इस पेड़ की शाखाएं जमीन से लगभग 3 फुट ऊँची हैं। एक शोध संस्थान के वैज्ञानिक केन टोबुट का कहना है कि यह बात बहुत अविश्वसनीय लगती है। इससे पहले मैंने नहीं सुना कि एक ही पेड़ पर दो प्रजाति के फल लग रहे हैं।

जानकारी : अर्चना सोगानी

एक जीव ऐसा भी...

आर्माडिलो एक अनोखा जीव है। किसी समय संसार में इसकी भिन्न–भिन्न सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती थी। आओ, इस जीव के बारे में अनोखी जानकारी जानते हैं।

साउथ अमेरिका में पाये जाने वाले इस जीव की ''पराग्वे'' क्षेत्र में एक दर्जन के करीब प्रजातियां है। वैसे इस जीव को सन् 2000 में विलुप्त हो रहे जानवरों की सूची में डाल दिया गया था। वर्तमान में इनकी संख्या अब काफी कम हो गई है।

हाँ, इस जीव की देखने की क्षमता काफी कम होती है। सिर्फ ''स्मेल'' के जरिए ही ये शिकार करते है। तैरने के साथ–साथ मात्र 5–6 मिनट तक पानी में रह सकते है।

वैज्ञानिकों के एक ताजा शोध के अनुसार यह जीव किसी समय धरती पर 30 से 40 फुट तक लम्बा हुआ करता था। इसकी मादा औसतन 18–20 फुट लम्बी हुआ करती थी। इसकी जीभ 8–9 फुट लम्बी तथा दांत 7–8 इंच के हुआ करते थे। शक्ल–सूरत में यह किसी दैत्य की तरह दिखाई देती थी जबकि नर के दांत औसतन तीन इंच लम्बे व जीभ पांच फुट की होती थी। ये दोनों ही अपनी जीभ को मुख से बाहर निकाल शिकार की घात में बैठ जाया करते थे। दरअसल, इनकी जीभ से एक चिपचिपी गंधयुक्त लार टपकती रहती थी, जो हवा के स्पर्श से आसपास के वातावरण में गंध फैलाने का कार्य करती थी। इसी गंध से मोहित होकर कई छोटे–मोटे जीव इनकी तरफ खींचे चले आते, जैसे ही वे इनकी जीभ को चाटने लगते तुरन्त ये अपने पैरों से दबोच, अपना भोजन बना लिया करते थे।

पढ़ो और हँसो

भिखारी : (राहगीर से) साहब! एक रुपया दे दो। दो दिनों से खाना नहीं खाया।

राहगीर : पहले यह बता कि एक रुपये में खाना मिलता कहाँ है? दोनों मिलकर खाएंगे।

★ ★ ★——★ ★ ★

अध्यापक : (विद्यार्थी से) तुम रोज खाना खाकर मुँह क्यों नहीं धोते? मैं तुम्हारा मुँह देखकर बता सकता हूँ कि आज तुमने क्या खाया है?

विद्यार्थी : बताइये सर मैंने क्या खाया है?

अध्यापक : दही बड़े।

विद्यार्थी : नहीं सर! वह तो कल खाये थे।

★ ★ ★——★ ★ ★

मोहन : (सोहन से) यार पता नहीं लोग एक महीने तक बिना नहाये कैसे रह जाते हैं।

सोहन : क्यों क्या हुआ?

मोहन : क्योंकि मुझे तो बीस दिन में ही खुजली होने लगती है।

★ ★ ★——★ ★ ★

एक हवाई जहाज हवाई अड्डे पर उतरा। सीढ़ियों से उतरते समय एक यात्री सीधा जमीन पर पड़ा और जमीन चूमने लगा।

जहाज का पायलट पास ही खड़ा था। वह यात्री से बोला– आपकी देशभक्ति की भावना ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। जिस तरह से आप सीढ़ियों से एकदम नीचे आकर देश की मिट्टी को चूमने लगे। वह आपकी देशभक्ति को दर्शाता है।

वह व्यक्ति बोला– यह सब छोड़ो, पहले मुझे यह बताओ कि सीढ़ियों पर केले का छिलका किसने रखा था?

★ ★ ★——★ ★ ★

भूगोल टीचर : (चिन्टू से) चिन्टू तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ था?

चिन्टू : जी मैडम, पंजाब में।

टीचर : कौन सा भाग?

चिन्टू : कौन सा भाग क्या? मेरा पूरा शरीर ही पंजाब में जन्मा था।

★ ★ ★——★ ★ ★

उमेश : आज मेरी किसी ने जेब काट ली।

सुरेश : तो पुलिस में रिपोर्ट करो।

उमेश : लेकिन गलती कर दी मैंने।

सुरेश : क्या?

उमेश : जेब काटने के बाद मैंने दरजी से जेब सिलवा ली।

एक लायब्रेरी हॉल में 1000 पन्ने की पुस्तक कितने दिनों में पढ़ी जा सकती है इस विषय का मुद्दा उठाया गया।

सबसे पहले एक लेखक ने कहा– दो महीने के अन्दर।

फिर एक वकील बोला– एक महीने के अन्दर।

आखिर में इंजीनियर बोला– अरे पहले यह बताओ कि परीक्षा देनी कब है? उसे हम सब मिलकर रातो–रात निपटा देंगे।

★ ★ ★——★ ★ ★

डॉक्टर ने बूढ़े मरीज से कहा– ऐसी दवा दूंगा कि तुम फिर से जवान हो जाओगे।

मरीज ने कहा– नहीं डॉक्टर साहब! मुझे ऐसी दवा नहीं चाहिये वरना मेरी बुढ़ापा पेंशन बन्द हो जायेगी।

★ ★ ★——★ ★ ★

चिन्टू तालाब में डूब रहा था। अचानक उसके हाथ में एक मछली आ गई। चिन्टू ने उसे बाहर फेंका और कहा– कम से कम तू तो अपनी जान बचा ले, मेरा क्या मैं तो डूब ही रहा हूँ।

★ ★ ★——★ ★ ★

एक आदमी : (पुलिस से) सर मेरे घर से टी. वी. छोड़कर बाकी सब चीजें चोरी हो गई हैं।

पुलिस : चोर ने सिर्फ टी.वी. किसलिए छोड़ा होगा?

आदमी : मुझे क्या पता? मैं उस समय टी. वी. पर सीरियल देख रहा था।

बस स्टॉप पर बच्चे को रोते देखकर कंडक्टर ने बस रोकी और पूछा– बेटे क्या हुआ?

बच्चा : मेरा दस का नोट खो गया है, अब मैं टिकट कैसे लूँगा?

कंडक्टर : चलो कोई बात नहीं, मैं तुम्हें मुफ्त में ले चलूँगा।

(बस मैं बैठकर बच्चा फिर रोने लगा।)

कंडक्टर : अब क्या हुआ?

बच्चा : मुझे नौ रुपये वापस चाहिए जो टिकट लेकर वापस मिलने थे।

★ ★ ★——★ ★ ★

नीतू : (नवीन से) जब तुम तेजी से कार चलाते हुए 'ट्रनिंग' लेते हो तो मुझे बहुत डर लगता है कि कहीं टक्कर न लग जाए।

नवीनः बेवकूफ डरा मत करो। ऐसे मौके पर मेरी तरह तुम भी आँख बंद कर लिया करो।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

वर्ग पहेली के सही उत्तर

1 ज	ग	दी	2 श	■	3 इ
य	■	■	4 ह	जा	र
5 ते	6 लं	गा	ना	■	फा
■	द	■	7 ई	8 रा	न
9 ज	न	10 ता	■	के	■
ले	■	ला	■	11 श	12 नि
13 बी	र	ब	ल	■	जी

कभी न भूलो

★ समय सबसे ज्यादा कीमती है, इसको फालतू कामों में खर्च मत करो।

★ खुद की भूल स्वीकार करने में कभी भी संकोच मत करो।

★ बहुत जरूरी हो तभी कोई चीज उधार लो।

★ ईश्वर पर पूरा भरोसा रखो।

★ प्रार्थना करना कभी मत भूलो, प्रार्थना में अपार शक्ति होती है।

★ जो आपके पास है उसी में खुश रहना सीखो।

★ हमेशा सकारात्मक सोच रखो।

★ कुछ पाने के लिए कुछ खोना नहीं बल्कि कुछ करना पड़ता है।

★ दिलों में रहना सीखो, घर में तो सभी रहते हैं।

★ बोल ऐसी चीज है जिसकी वजह से इंसान दिल में उतर जाता है या दिल से उतर जाता है।

★ खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते, अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत होते हैं।

★ फूलों की तरह मुस्कुराते रहिये, भंवरों की तरह गुनगुनाते रहिये। भूल जाईये शिकवे–शिकायतों के पलों को और छोटी–छोटी खुशियों के मोती लुटाते रहिये।

★ जीवन बांसुरी की तरह है, जिसमें बाधारूपी कितने भी छेद क्यों न हो लेकिन जिसको उसे बजाना आ गया, उसे जीवन जीना आ गया।

★ जब तक आप न चाहें तब तक आपको कोई भी ईर्ष्यालु, क्रोधी, प्रतिशोधी या लालची नहीं बना सकता है।

★ त्रुटियां करना मानवीय स्वभाव है, क्षमा कर देना दैवीय।

★ केवल निष्पक्ष और ईमानदार लोगों के काम मधुर सुगंध देते हैं और फूल के समान खिलते हैं।

★ झूठ नहीं बोलने का गुण ग्रहण कर लेने से अन्य किसी धर्म कर्म की आवश्यकता नहीं रह जाती।

★ मनुष्य को जन्म से नहीं बल्कि उसके कर्म से परखा जाना चाहिए। मुख्य बात है सदाचार, अच्छे चरित्रवाला और अच्छे कर्म करने वाला मनुष्य अच्छा होता है। ओछे चरित्र वाला ओछे कर्म वाला व्यक्ति नीच होता है।

संग्रहकर्ता : ईश्वरभाई मकवाणा

बाल कविता : हरजीत निषाद

गुरु का आदर जो भी करते

पांच सितम्बर प्यारा जन्म दिन।
शिक्षक दिवस बना अब यह दिन।
देश के प्यारे राष्ट्रपति थे,
प्रिय सर्वपल्ली राधाकृष्णन।

भगवद्गीता के विद्वान थे।
चिंतक वो श्रेष्ठ महान थे।
उत्तम शिक्षक सबके प्यारे,
सुन्दर सच्चे वो इन्सान थे।

बिना गुरु के नहीं है ज्ञान।
मन का मिटता नहीं है मान।
गुरु का आदर जो भी करते,
उनकी कभी न मिटती शान।

शिक्षक दिवस मनाएंगे हम।
श्रद्धा सुमन चढ़ाएंगे हम।
गुरुवर ने उपकार किया है,
गुरु को शीश झुकाएंगे हम।

शिक्षक की भूमिका

एक बार पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने अपने सहयोगी सृजनपाल सिंह से कहा, ''यह बताओ कि अपने आपको कैसे याद किया जाना चाहते हो?''

सृजनपाल ने जवाब दिया, ''सर, जीवन में अभी सर्वोत्तम किया जाना शेष है, मेरी कोई उपलब्धि ही नहीं, मैं क्या जवाब दूं?''

डॉ. कलाम बोले, ''यह बताओ, तुम अपनी उपलब्धियों के लिये याद किये जाना चाहते हो या अपने कार्य के माध्यम से?''

सृजनपाल ने कहा, ''दोनों से ही सर। सर, आप बताईये न, आप स्वयं को किस बात के लिये याद किये जाना चाहते हैं? राष्ट्रपति, वैज्ञानिक, लेखक या मिसाइलमैन?''

अपने प्रश्न के बाद सृजनपाल डॉ. कलाम की ओर देख ही रहे थे कि वे बोले, ''मैं तो चाहूँगा कि लोग मुझे एक शिक्षक के रूप में याद रखें। एक शिक्षक ही ऐसा व्यक्ति होता है जो बच्चे को तराशकर उसे जीवन में कामयाब बनाता है। इसलिये मैं प्रयास करूंगा कि लोग मुझे शिक्षक के रूप में ही जानें।''

यह सुनकर सृजनपाल सिंह, डॉ. कलाम के आगे नतमस्तक हो गये और बोले, ''सर, आप मेरे भी शिक्षक हैं। मैं आजीवन आपकी इन बातों को याद रखूंगा।''

प्रस्तुति : रूपनारायण काबरा

जुलाई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **हिमांशु** **12 वर्ष**
म.नं. 157/16, शिवाजी नगर,
गुरुग्राम (हरियाणा)

2 **लवलीन** **13 वर्ष**
म.नं. 1409/3, फेस–XI,
सेक्टर 65, मोहाली (पंजाब)

3 **सोमजानी** **10 वर्ष**
योगेश्वर सोसाइटी, पार्वती नगर,
गोधरा (गुजरात)

4 **अनिरुद्ध** **9 वर्ष**
ग्राम और पोस्ट : छतरी
जिला : कांगड़ा (हि.प्र.)

5 **विधि** **11 वर्ष**
सिलाशा, भैरव रोड,
गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

जगदीप (राणाप्रताप बाग, दिल्ली), सुरभि (मंडी डबवाली), गौतम, पीयूष, रोशन, सानिया (गोधरा), जयंत (नवापारा, राजिम), आरती (भटिण्डा), ऐश्वर्या (हिंदल्गा, बेलगाम), निहारिका (मोहाली), यवनिका (भरमोटी कलां), मनीषा (इंदौर), प्रवीण (सुरीला), सोनी (श्रीनिवासपुरी, दिल्ली), वैभव किशोर (डांगोली), रिद्धिमा (रामपुरा फूल), सिमरन (फगवाड़ा), पलक, परवान, यशप्रीत (चंडीगढ़), सुदीक्षा (कानपुर), दीप्ति (धनास), सतुंष्ट (सूरतगढ़), गोल्डी (आजमगढ़), प्रतिभा (गुरुग्राम), शुभम (मोतियाखान, दिल्ली)।

सितम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 सितम्बर 2017 तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) नवम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

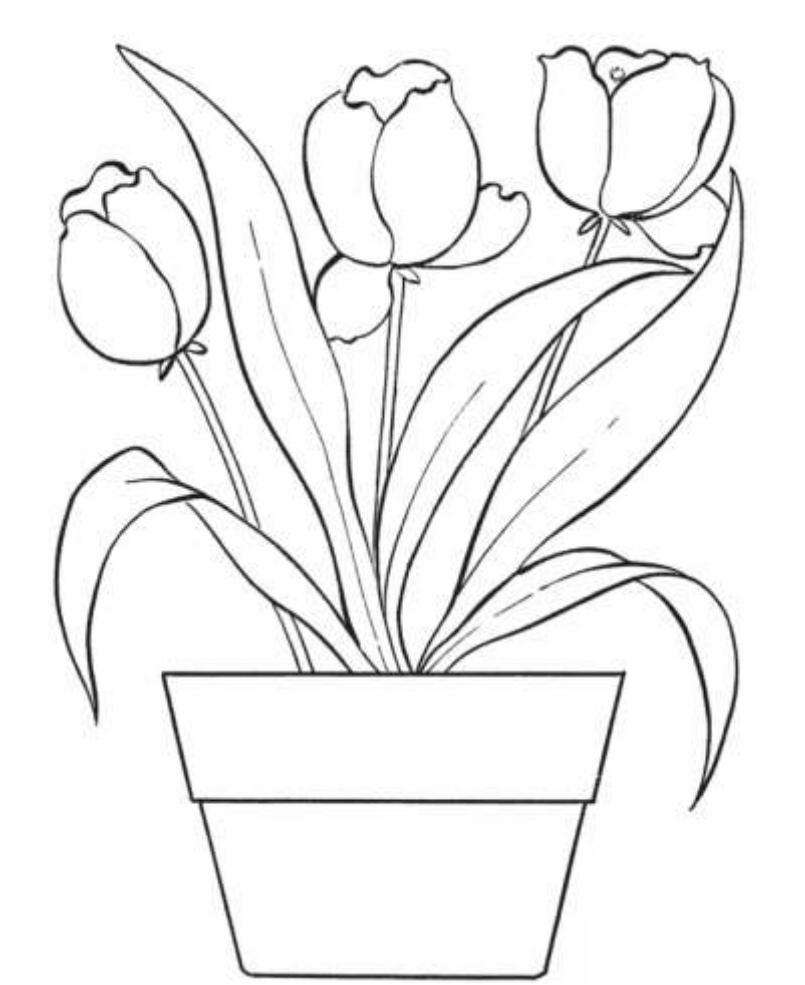

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया का जुलाई अंक प्राप्त हुआ। 'मुखपृष्ठ' देखकर मन में हर्ष का भाव भर गया। ऐसा लगा कि इन्द्रधनुष, बादल, पंछी, लहलहाते पेड़, गर्मी की छुट्टियों में खेलते बच्चे सबकुछ 'मुखपृष्ठ' में ही समा गया हो। 'बैक कवर' में भी निरंकारी महात्माओं के लिए सामग्री होती है। हम 'क्विज' में भी बच्चों से प्रश्न पूछते हैं कि निरंकारी पत्रिकाएं कितनी भाषाओं में आती हैं।

स्तम्भ और प्रेरक–प्रसंग भी बड़े ही आकर्षक हैं। विज्ञान प्रश्नोत्तरी के प्रश्न बड़े ही ज्ञानवर्द्धक हैं। इस अंक में सद्गुरु माता जी व बाबा जी के वचन बहुत ही प्रेरणादायक हैं।

हम दातार से यही प्रार्थना करते हैं कि यह हँसती दुनिया और अधिक ऊँचाईयों को छूती जाये।

– अमिता मोहन (भटिण्डा)

मैं हँसती दुनिया को बहुत पसन्द करता हूँ और इसे बड़े चाव से पढ़ता हूँ। इसमें प्रकाशित रचनाएं बच्चों के लिए बहुत उपयोगी होती हैं एवं बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करती हैं।

इसमें प्रकाशित प्रेरक–प्रसंग और जानकारियां ज्ञानवर्द्धक एवं शिक्षाप्रद होते हैं।

– भरत कुमार (धामोद)

हिन्दी

हिन्दी का करो सम्मान तुम।
न होने दो इसका अपमान तुम।
ये है हमारी राष्ट्र की भाषा।
इस पर करो अभिमान तुम।

करो हिन्दी का प्रचार तुम।
पाओगे सादर आभार तुम।
ये होगी जन–जन की भाषा।
बसा दो हिन्दी का संसार तुम।

हिन्दी को दो नया मुकाम तुम।
करो इसका ऊँचा नाम तुम।
पूरे विश्व में हो कीर्ति इसकी।
कर दो ऐसा काम तुम।

– कीर्ति श्रीवास्तव (चितौड़गढ़)

स्कूल चलें हम

स्कूल चलें हम, स्कूल चलें हम।
भविष्य को सुधारने चलें हम।
छोटा बस्ता, छोटी बोतल।
पढ़ने की किताबें ले चलें हम।

बारहखड़ी हो या अल्फाबेट।
टीचर जी से पढ़ने चलें हम।
चुन्नू, मुन्नू, गुड्डी, पप्पू।
स्कूल को दौड़ चलें हम।

अच्छी–अच्छी बातें सीखकर।
नेक राह पर चलें हम।
शिखर पर पहुँचाएंगे खुद को।
देश का नाम रोशन करने चलें हम।

– कीर्ति श्रीवास्तव (चितौड़गढ़)

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning
with exciting and fun features
highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots
excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
: Licence No. U (DN)-23/2015-17
: Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया (चार भाषाओं में) **सन्त निरंकारी** (ग्यारह भाषाओं में) **एक नज़र** (तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
31, Pratapganj,
VADODARA-390022 (Guj.)
Ph. 0265-2750068

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan,
KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO Prescribed dates 21th & 22nd Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)